



श्रमसाधना



हम बनेंगे आपकी आवाज
स्टेन करें और वैनल से जुड़े

shramsadhnagwl@gmail.com

श्रम की शक्ति, राष्ट्र की प्रगति

www.shramsadhnnews.com

साप्ताहिक

वर्ष : 52, अंक : 37 ज्वालियर, रविवार 13 सितम्बर 2026

डाक पंजीयन

RNI रजि. क्र. 45334/74

विक्रम संवत् 2083 पृष्ठ 12, मूल्य 1 रुपया

डाक L-2-13/समा.पत्र/पं. 40020250/22-23

आगर मालवा से मुख्यमंत्री करेंगे राशि का अंतरण; योजना शुरू होने से अब तक 65,395 करोड़ से अधिक पहुंचाए

लाइली बहना की 40वीं किस्त आज, 1.25 करोड़ महिलाओं के खातों में आएंगे 1835 करोड़

भोपाल जीएनएस
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार 13 सितंबर को आगर मालवा से मुख्यमंत्री लाइली बहना योजना की सितंबर माह की 40वीं किस्त का अंतरण करेंगे। इस अवसर पर प्रदेश की 1 करोड़ 25 लाख 10 हजार 150 पात्र महिलाओं के बैंक खातों में 1,835 करोड़ 09 लाख 22 हजार 450 रुपये की मासिक आर्थिक सहायता सीधे अंतरित की जाएगी। सितंबर की किस्त के साथ ही योजना के प्रारंभ से अब

तक महिलाओं को नियमित मासिक सहायता के रूप में अंतरित राशि 65,395.99 करोड़ रुपये हो जाएगी।

1,000 रुपये से शुरू हुई सहायता अब 1,500 रुपये प्रतिमाह

मुख्यमंत्री लाइली बहना योजना की शुरुआत जून 2023 में हुई थी। उस समय पात्र महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रुपये की आर्थिक सहायता दी जाती थी। अक्टूबर 2023 से इसमें 250 रुपये की वृद्धि कर



सहायता राशि 1,250 रुपये प्रतिमाह की गई। नवंबर 2025 से एक बार फिर 250 रुपये की वृद्धि के बाद पात्र महिला हितग्राहियों को वर्तमान में 1,500 रुपये प्रतिमाह

की आर्थिक सहायता दी जा रही है।

योजना में ऐसी पात्र लाभार्थी महिलाओं को भी प्रावधान के अनुसार लाभ दिया जा रहा है, जिन्हें सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना से प्रतिमाह 900 रुपये प्राप्त हो रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत उन्हें अंतर की राशि उपलब्ध कराई जा रही है।

जून 2023 से अगस्त 2026 तक लाइली बहना योजना के अंतर्गत 39 नियमित मासिक किस्तों का भुगतान किया जा चुका

है। अब सितंबर में 40वीं किस्त अंतरित की जाएगी। इसके अतिरिक्त रक्षाबंधन के अवसर पर अगस्त 2023, अगस्त 2024, अगस्त 2025 और अगस्त 2026 में लाभार्थी महिलाओं को 250 रुपये की विशेष आर्थिक सहायता भी दी गई है।

महिलाओं तक पहुंची 65 हजार करोड़ से अधिक की राशि लाइली बहना योजना के माध्यम से जून 2023 से अगस्त 2026 तक 63,560.90 करोड़ रुपये की राशि महिलाओं के खातों

में अंतरित की जा चुकी है। वित्तीय वर्ष 2026-27 में सितंबर 2026 तक योजना के अंतर्गत 11,300 करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है। वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए मुख्यमंत्री लाइली बहना योजना के तहत 23,882.81 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव इसके अलावा आगर मालवा में 225 करोड़ रुपये से अधिक के कुल 33 विकास कार्यों का भूमि-पूजन और 28 करोड़ से अधिक के 17 कार्यों का लोकार्पण भी करेंगे।

अंगूठा लगवाने के बाद भी खाद्यान्न नहीं देने का आरोप, तहसीलदार ने मौके पर पहुंचकर शुरू कराया वितरण

दो माह से राशन नहीं मिला तो ग्रामीणों ने किया चक्काजाम

शिवपुरी जीएनएस
पिछोर अनुविभाग के चरखरू गांव में करीब दो माह से राशन नहीं मिलने से नाराज ग्रामीणों ने शनिवार को सड़क पर चक्काजाम कर दिया। ग्रामीणों का आरोप था कि राशन दुकान के विक्रेता ने उनसे अंगूठा तो लगवा लिया, लेकिन इसके बाद खाद्यान्न नहीं दिया गया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया, लेकिन वे राशन मिलने तक हटने को तैयार नहीं हुए।

बाद में तहसीलदार शिवशंकर गुर्जर मौके पर पहुंचे



और ग्रामीणों की समस्या सुनी। उन्होंने तत्काल राशन वितरण शुरू कराया। खाद्यान्न मिलना शुरू होने के बाद ग्रामीणों ने चक्काजाम समाप्त कर दिया।

11 राशन दुकानों पर कार्रवाई : इधर, कोलारस अनुविभाग में राशन वितरण की समीक्षा के दौरान 11 उचित मूल्य दुकानों में वितरण निर्धारित

मात्रा की तुलना में करीब 80 प्रतिशत कम पाया गया। प्रशासन के अनुसार ई-केवाईसी पोर्टल पर इन दुकानों के लिए पर्याप्त राशन उपलब्ध था, इसके बावजूद वितरण का प्रतिशत काफी कम रहा। मामले में संबंधित प्रबंधक, विक्रेता और सह-विक्रेताओं के खिलाफ कार्रवाई की गई है। प्रशासन ने उनसे कुल 25 लाख 80 हजार 225 रुपए की वसूली के आदेश दिए हैं। संबंधित तहसीलदारों को निर्धारित राशि वसूलकर शासन के खाते में जमा कराने के निर्देश दिए गए हैं।

सोशल मीडिया पर पिस्टल लहराना पड़ा भारी, युवक गिरफ्तार

ग्वालियर जीएनएस
ऑपरेशन ईगल के तहत विश्वविद्यालय थाना पुलिस ने सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में झगड़े के दौरान पिस्टल लहराने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर एक पिस्टल, मैग्जीन और एक जिंदा कारतूस बरामद किया है। आरोपी के खिलाफ पहले से भी अन्य थानों में अपराध दर्ज होना बताया गया है।

पुलिस के अनुसार 10 सितंबर को सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हुआ था। इसमें कैप्टन रूप सिंह स्टेडियम के पास झगड़े के दौरान एक युवक हाथ में पिस्टल लहराता दिखाई दे रहा था। वीडियो सामने आने के बाद वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने मामले को गंभीरता से लेते हुए

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पूर्व शिवेश सिंह बघेल को आरोपी की पहचान कर कार्रवाई के निर्देश दिए।

वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर सीएसपी विश्वविद्यालय रवि भदौरिया के मार्गदर्शन और थाना प्रभारी निरीक्षक रविन्द्र कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने वीडियो में दिखाई दे रहे युवक की तलाश शुरू की। जांच के दौरान उसकी पहचान सुमित चौहान (23), निवासी श्रीराम विहार कॉलोनी, बहोड़ापुर के रूप में हुई। पुलिस ने उसे अभिरक्षा में लेकर पूछताछ की।

पूछताछ में आरोपी ने वीडियो में स्वयं पिस्टल लहराना स्वीकार किया। उसने पुलिस को बताया कि पिस्टल को नीलम पुल के पास झाड़ियों में पत्थर के पीछे छिपाकर रखा है।

गायत्री शक्तिपीठ के विराट पुस्तक मेले का शुभारंभ, साहित्य और विचारों के जरिए जनजागरण पर जोर

वैचारिक क्रांति के पुरोधा थे पं. श्रीराम शर्मा : संत ऋषभानंद

ग्वालियर जीएनएस
गायत्री शक्तिपीठ तानसेन रोड की ओर से कला वीथिका, पड़ाव चौराहा पर आयोजित विराट पुस्तक मेले का शुभारंभ संत श्री ऋषभानंद जी, प्रबंधक एवं व्यवस्थापक लाल टिपारा गौशाला तथा अतिरिक्त जिलाधीश सीबी प्रसाद ने किया। अतिथियों ने पुस्तक मेले का भ्रमण कर प्रदर्शित साहित्य का अवलोकन किया।

इस अवसर पर संत ऋषभानंद ने कहा कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वैचारिक क्रांति के पुरोधा थे। हिमालय में बैठे संतों ने आचार्य श्रीराम शर्मा को अपनी प्रेरणाओं को जन-जन तक

पहुंचाने और लिपिबद्ध करने का माध्यम चुना। उनके द्वारा रचित सदसाहित्य निश्चित रूप से समाज और जनमानस की विचार-ग्रंथियों को खोलने का कार्य करेगा।

अतिरिक्त जिलाधीश सीबी प्रसाद ने कहा कि वे और उनके पिता लगातार गुरुदेव द्वारा प्रकाशित अखंड ज्योति के पाठक रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में गायत्री परिवार से जुड़े करोड़ों लोग आध्यात्मिक और वैचारिक जागरण के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं। यही आध्यात्मिक एवं वैचारिक क्रांति देश को सुरक्षित और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका



निभाएंगी। शांतिकुंज प्रतिनिधि एवं उप जोन प्रभारी डीपी लवानिया ने

गायत्री परिवार की ओर से संचालित सप्त आंदोलनों की जानकारी दी। कार्यक्रम में स्वागत

भाषण संयोजक यशराजू भंसाली ने दिया। संचालन डॉ. संजय गुप्ता ने किया, जबकि आभार सहसंयोजक आरके चोपड़ा ने व्यक्त किया।

भजन संध्या में गूँजे गुरुदेव के गीत : शाम चार बजे 'एक शाम गुरुदेव के नाम' भजन संध्या आयोजित की गई। इसमें संतोष तोमर ने गुरुदेव द्वारा रचित गीतों की प्रस्तुतियां दीं। शाम 5.30 बजे शहर के प्रमुख चिकित्सकों की विचार गोष्ठी हुई। इसमें डॉ. अशोक मिश्रा, डॉ. प्रदीप सक्सेना, डॉ. एसएम तिवारी, डॉ. एससी पिपरिया, डॉ. केएस मंगल और डॉ. राकेश रायजादा सहित

अन्य चिकित्सकों ने गुरुदेव के साहित्य की उपयोगिता पर विचार रखा।

13 सितंबर को होंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम : संयोजक यशराजू भंसाली एवं सहसंयोजक आरके चोपड़ा ने बताया कि 13 सितंबर को दोपहर 12 बजे ददरौआ महाराज पुस्तक मेले का भ्रमण करेंगे। शाम चार बजे भक्ति एवं राष्ट्र वंदना कार्यक्रम होगा, जिसमें पीयूष तांबे और प्रतीक्षा गीतों की प्रस्तुति देंगे। शाम 5.30 बजे विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव और प्राचार्यों की विचार गोष्ठी आयोजित की जाएगी।

तुला, कुंभ, मीन सहित ये राशि वाले संभलकर रहें, बुध की चाल करेगी परेशान!

बुध कन्या राशि में आ रहे हैं, जो उनकी अपनी उच्च राशि है। इस दौरान फालतू खर्चों सहित जोखिम लेने से बचने के लिए सावधानियां और उपाय जरूरी हैं।

7 सितंबर 2026 को बुधदेव कन्या राशि में कदम रखने जा रहे हैं। कन्या राशि को बुधदेव की अपनी और उच्च राशि माना जाता है, जिससे यहां इनकी ताकत बहुत बढ़ जाती है। वैसे तो यह गोचर बुद्धि, बातचीत, पढ़ाई, व्यापार और सही फैसले लेने के लिए बहुत अच्छा माना जाता है, लेकिन हर राशि के लिए बुध अलग-अलग खानों में बैठते हैं। इसी वजह से कुछ लोगों को फालतू खर्चों, पैसों के जोखिम, रिश्तों की

गलतफहमियों या मानसिक तनाव जैसी बातों पर खास ध्यान देना होगा। तुला, कुंभ और मीन राशि के लोगों को इस दौरान काफी संभलकर चलने की जरूरत है।

तुला राशि

बुधदेव आपकी राशि से बारहवें भाव में गोचर करेंगे। इस दौरान यात्रा, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन या विदेश से जुड़े कामों पर आपके पैसे पानी की तरह बह सकते हैं। बाहर के कामों से कुछ मौके जरूर मिल सकते हैं, लेकिन बढ़ा हुआ खर्च आपकी बचत पर भारी पड़ सकता है। बिना पूरी जांच-परख के किसी भी जगह पैसे लगाने से बिल्कुल बचें। फालतू के खर्चों, कर्ज और जल्दबाजी में किए गए निवेश को लेकर बहुत सतर्क रहें।

उपाय : हरी मूंग की दाल या हरी सब्जियां दान करें और भगवान गणेश की पूजा करें।

कुंभ राशि



बुधदेव आपकी राशि से आठवें भाव में गोचर करेंगे। यह समय साझे के धन, टैक्स, बीमा, निवेश और अचानक होने वाले आर्थिक बदलावों को लेकर बहुत सतर्क रहने का है। पैसों या कानूनी कागजातों पर दस्तखत करने से पहले उसका हर एक नियम ध्यान से पढ़ लें। सिर्फ इसलिए कोई

जोखिम न लें कि सामने वाला मौका बहुत अच्छा दिखा रहा है। साझे के पैसों, निवेश, टैक्स और जरूरी दस्तावेजों को लेकर पूरी सावधानी बरतें।

उपाय : बुधवार के दिन भगवान गणेश को दूर्वा घास अर्पित करें और हरी मूंग का दान करें।

मीन राशि

बुधदेव आपकी राशि से सातवें भाव में गोचर करेंगे। इससे आपके आपसी रिश्ते और व्यापार की पार्टनरशिप बहुत अहम हो जाएगी। इस दौरान आपकी बातचीत का तरीका सबसे ज्यादा मायने रखेगा। छोटी-छोटी बातों पर

बहुत ज्यादा बहस करने से आपके पार्टनर के साथ गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं। कारोबारियों को नए प्रस्ताव मिल सकते हैं, लेकिन किसी भी साझीदारी को पक्का करने से पहले सभी शर्तें अच्छी तरह समझ लें। पार्टनर के साथ अनबन, शक और जल्दबाजी में किए गए समझौतों को लेकर सावधान रहें।

उपाय- बुधवार के दिन भगवान गणेश की पूजा करें और हरी मूंग का दान करें।

सावधानी बरतने के मुख्य बिंदु

इन तीन राशियों को खास तौर पर इन बातों पर ध्यान देना चाहिए- बिना सोचे-समझे पैसों से जुड़े कोई भी फैसले न लें। जरूरी कागजातों और दस्तावेजों को बहुत ध्यान से पढ़ें। पार्टनरशिप की शर्तों को हमेशा एकदम साफ रखें। फालतू के खर्चों पर अपनी लगाम कसकर रखें। रिश्तों में बात-बात पर बहस करने से बचें।

चातुर्मास में हुआ बच्चे का जन्म, तो नामकरण संस्कार कब करें? दूर करें ये कंफ्यूजन

चातुर्मास को हिंदू धर्म में चार महीने की ऐसी अवधि माना जाता है, जिसमें कई तरह के मांगलिक कार्यों पर रोक रहती है। साल 2026 में चातुर्मास 25 जुलाई से शुरू हुआ है और इसका समापन 20 नवंबर को देवउठनी एकादशी के साथ होगा। इस दौरान विवाह, गृह प्रवेश जैसे बड़े मांगलिक कार्य करना आमतौर पर वर्जित माना जाता है। मान्यता है कि इस अवधि में भगवान विष्णु योग निद्रा में रहते हैं, इसलिए शुभ कार्यों के लिए देवउठनी एकादशी के बाद का समय शुभ माना जाता है।

ऐसे में अगर चातुर्मास के दौरान किसी बच्चे का जन्म हो जाए, तो माता-पिता के मन में अक्सर ये सवाल आता है कि क्या इस अवधि में बच्चे का नामकरण संस्कार किया जा सकता है? दरअसल, चातुर्मास में बड़े मांगलिक आयोजनों को टालने की परंपरा है, लेकिन नामकरण संस्कार को लेकर स्थिति अलग मानी जाती है। शास्त्रों और विद्वानों के मत के अनुसार विशेष परिस्थिति या परंपरा के तहत चातुर्मास में भी बच्चे का नामकरण संस्कार किया जा सकता है।

चातुर्मास में नामकरण संस्कार करना सही या गलत?

हिंदू धर्म में नामकरण शिशु के जन्म के 11वें या 12वें दिन (अशौच या सूतक काल समाप्त होने के बाद) करने का विधान है। यदि यह समय चातुर्मास में पड़े, तो कई जगहों पर इसे सामान्य रूप से संपन्न किया जाता है, क्योंकि ये एक अनिवार्य संस्कार है। फिर भी, यदि आप बड़ा उत्सव या भव्य आयोजन करना चाहते हैं, तो उसे देवउठनी एकादशी के बाद के लिए टाला जा सकता है। किसी भी संशय से बचने के लिए स्थानीय योग्य पंडित या ज्योतिषाचार्य से सलाह जरूर लें।

चातुर्मास (विवाह आदि मांगलिक कार्यों के निषेध की चार महीने की अवधि) के दौरान भी



बच्चे का नामकरण संस्कार सामान्य विधि से और बिना किसी संकोच के किया जा सकता है। जन्म और मृत्यु पूर्व निर्धारित नहीं होते, इसलिए शास्त्रों और आचार्यों के अनुसार जन्म के 11वें, 12वें, 16वें दिन या किसी भी शुभ नक्षत्र व मुहूर्त में नामकरण किया जा सकता है।

नामकरण संस्कार की विधि

घर की सफाई करके पूजा का स्थान तय करें। माता और शिशु को स्नान कराएं।

भगवान गणेश, कुलदेवता और नवग्रहों का आह्वान कर पूजा और हवन संपन्न करें।

पंडित जी से जन्म नक्षत्र के अनुसार राशि और नामाक्षर (नाम का पहला अक्षर) की जानकारी लें। पिता या परिवार के बड़े बुजुर्ग बच्चे के दाहिने कान में तीन बार चुने गए नाम को धीरे से कहते हैं।

इसके बाद नाम की घोषणा की जाती है, सब लोग बच्चे को आशीर्वाद देते हैं और अंत में आरती व प्रसाद वितरण होता है।

नामकरण के लिए शुभ तिथि, वार और नक्षत्र

शुभ तिथियां- द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी और पूर्णिमा। (चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी वर्जित हैं)।

शुभ वार- सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र- रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अश्विनी और रेवती।

नामकरण मुहूर्त सितंबर 2026

2 सितंबर 2026 (बुधवार)- सुबह 07:14 से 3 सितंबर की रात 02:44 तक (नक्षत्र- पूर्वा फाल्गुनी)

6 सितंबर 2026 (रविवार)- सुबह 07:14 से 7 सितंबर की रात 02:23 तक (नक्षत्र- हस्त)

9 सितंबर 2026 (बुधवार)- सुबह 07:14 से 10 सितंबर की रात 02:56 तक

(नक्षत्र- चित्रा)

13 सितंबर 2026 (रविवार)- सुबह 07:14 से 14 सितंबर की रात 02:44 तक (नक्षत्र- अनुराधा)

17 सितंबर 2026 (गुरुवार)- सुबह 07:14 से दोपहर 02:23 (अगले दिन 18 सितंबर) तक (नक्षत्र- उत्तरा भाद्रपद)

21 सितंबर 2026 (सोमवार)- सुबह 07:14 से दोपहर 02:44 (अगले दिन 22 सितंबर) तक (नक्षत्र- रेवती)

25 सितंबर 2026 (शुक्रवार)- सुबह 07:14 से दोपहर 02:56 (अगले दिन 26 सितंबर) तक (नक्षत्र- रोहिणी)

1700 साल पुराना रहस्य सामने आया ! एरण में मिला शिलापट्ट भगवान बलराम के जन्म की पूरी कथा पत्थर पर दर्ज

सागर। मध्य प्रदेश के सागर जिले में स्थित प्रसिद्ध पुरास्थल एरण से भारतीय इतिहास और पुरातत्व जगत के लिए महत्वपूर्ण खोज सामने आई है। यहां पांचवीं-छठी शताब्दी यानी गुप्तकाल का एक दुर्लभ शिलापट्ट मिला है, जिसे करीब 1700 साल पुराना बताया जा रहा है। दावा है कि यह भारत में अब तक मिला पहला ऐसा प्रमाण है, जिसमें भगवान बलराम के जन्म और पौराणिक 'गर्भ-प्रत्यारोपण' की कथा को तीन अलग-अलग दृश्यों में उकेरा गया है। एरण में विभिन्न उत्खनन कार्यों में शामिल रहे सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर नागेश दुबे और उनके सहयोगी डॉ. मोहन लाल चढ़ार ने इन शिलाफलकों का अध्ययन और विश्लेषण किया है। उनके अनुसार, यह खोज प्राचीन भारतीय कला, धार्मिक परंपराओं और तत्कालीन शिल्पकला की समझ के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है।



अश्विनी कुमारों को भी दिखाया गया

पौराणिक परंपरा के अनुसार, देवकी के सातवें गर्भ को माता रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित किया गया था। इसी कथा को भगवान बलराम के जन्म से जोड़ा जाता है। शिलापट्ट पर इस प्रक्रिया में सहायता करने वाले देवताओं के चिकित्सक अश्विनी कुमारों को भी दर्शाया गया है। उन्हें दो अश्वमुख यानी घोड़े के चेहरे वाली आकृतियों के रूप में उकेरा गया है। यह चित्रण शिलापट्ट के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक माना जा रहा है।

पांच फीट लंबे शिलापट्ट पर तीन दृश्य

करीब पांच फीट लंबे शिलापट्ट पर भगवान बलराम से जुड़ी कथा को तीन दृश्यों के जरिए प्रस्तुत किया गया है। इनमें धार्मिक मान्यताओं के साथ तत्कालीन मूर्तिकला और दृश्य

प्रस्तुति की बारीकियां भी दिखाई देती हैं। पहले दृश्य में क्षीरसागर में शेषशायी विष्णु को दर्शाया गया है। भगवान विष्णु सात फणों वाले शेषनाग की शय्या पर विराजमान हैं। क्षीरसागर को आठ लहरों के रूप में दिखाया गया है। उनके नाभि-कमल पर ब्रह्मा और चरणों के पास माता लक्ष्मी को स्थान दिया गया है। वहीं वासुदेव और देवकी हाथ जोड़कर विष्णुधर्मोत्तर पुराण की परंपरा के अनुरूप भगवान विष्णु की स्तुति करते हुए दिखाई देते हैं।

पहले भी मिल चुकी हैं बलराम की प्रतिमाएं

एरण पुरास्थल से इससे पहले भी गुप्तकाल से जुड़ी भगवान बलराम की प्रतिमाएं मिल चुकी हैं। इन प्रतिमाओं में बलराम को हल और सुरा-पात्र धारण किए हुए दिखाया गया है। हालांकि, नए शिलापट्ट की खसियत यह बताई जा रही है कि इसमें केवल किसी देवता की प्रतिमा नहीं, बल्कि एक पूरी

पौराणिक कथा को क्रमबद्ध दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसमें जन्म की कथा के साथ गर्भ-प्रत्यारोपण की पौराणिक अवधारणा को भी दृश्य रूप दिया गया है।

प्राचीन भारतीय कला के लिए क्यों अहम है खोज?

शोधकर्ताओं के मुताबिक, यह शिलापट्ट प्राचीन भारतीय शिल्पकारों की कल्पनाशीलता और कथा को दृश्य माध्यम में प्रस्तुत करने की क्षमता का महत्वपूर्ण उदाहरण हो सकता है। करीब 1700 साल पुराने इस शिलापट्ट में धार्मिक आख्यानों को पात्रों, भाव-भंगिमाओं और प्रतीकों के जरिए उकेरा गया है। एरण से मिली यह खोज इतिहास, पुरातत्व और भारतीय कला के शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इससे गुप्तकालीन धार्मिक मान्यताओं, कला परंपराओं और उस दौर के शिल्पकारों की तकनीक को समझने के लिए नए अध्ययन की संभावनाएं खुल सकती हैं।

रोहिणी की गोद में नवजात बलराम



शिलापट्ट के तीसरे दृश्य में माता रोहिणी को नवजात बलराम को स्तनपान कराते हुए दिखाया गया है। रोहिणी लेटी हुई हैं और उनका सिर माता यशोदा की गोद में बताया गया है। दृश्य में नंद बाबा, एक वृद्ध सेविका और आभूषणों तथा विशेष केशविन्यास से सजी महिला आकृतियां भी मौजूद हैं। इन आकृतियों के जरिए तत्कालीन नंदगांव के वातावरण को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मध्य प्रदेश से सबक लेती पश्चिम बंगाल भाजपा

राजनीति में चुनाव परिणाम दिखाई देते हैं, लेकिन उनके पीछे चलने वाले संगठनात्मक प्रयोग अक्सर दिखाई नहीं देते। भारतीय जनता पार्टी की कार्यशैली को समझने के लिए मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल को साथ पढ़ना इसलिए महत्वपूर्ण है। मध्य प्रदेश को भाजपा की एक ऐसी राजनीतिक प्रयोगशाला कहा जा सकता है, जहां सत्ता, संगठन, नेतृत्व और दूसरे दलों से आए नेताओं के साथ कई प्रयोग हुए और उनके अनुभव आगे की रणनीति का हिस्सा बने। 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ कांग्रेस के 22 विधायकों के भाजपा में आने और कमलनाथ सरकार के पतन के बाद भाजपा सत्ता में लौटी। तत्कालीन भाजपा सत्ता के परिस्थितियों में यह प्रयोग सफल रहा, लेकिन इसके साथ संगठन के सामने एक चुनौती

भी आई। वर्षों तक कांग्रेस से संघर्ष करने वाले भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच अचानक वे नेता आ गए, जिनसे वे कल तक राजनीतिक मुकाबला कर रहे थे।

यहीं भाजपा के सामने मूल प्रश्न खड़ा हुआ कि सत्ता के लिए दूसरे दल के मजबूत नेताओं को साथ लेना और संगठन को उन्हीं के भरोसे छोड़ देना, दोनों अलग बातें हैं।

2023 में भाजपा ने मध्य प्रदेश में शानदार वापसी की और मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाया। इसके बाद संगठन में संघ पृष्ठभूमि वाले नेताओं की भूमिका को भी महत्व मिला। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का राज्य की सभी 29 सीटें जीतना यह संकेत था कि नेतृत्व परिवर्तन के बावजूद संगठन का आधार मजबूत था। मध्य प्रदेश का अनुभव इसलिए महत्वपूर्ण है

क्योंकि यहां भाजपा ने सीखा कि चुनावी लाभ के लिए बाहर से आए नेता उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन पार्टी की स्थायी शक्ति उसके अपने संगठन और कार्यकर्ता में होती है। शायद यही अनुभव पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक अलग रूप में दिखाई देता है। बंगाल में भाजपा को सत्ता विरासत में नहीं मिली थी। वहां उसके कार्यकर्ताओं ने लंबे संघर्ष के बाद संगठन खड़ा किया और 2021 में पार्टी प्रमुख विपक्षी शक्ति बनकर उभरी। इसी दौरान तृणमूल कांग्रेस के कई प्रभावशाली नेता और विधायक भाजपा में आए। मुकुल रॉय से लेकर सुवेंदु अधिकारी तक, इन नेताओं ने भाजपा के विस्तार में भूमिका निभाई। लेकिन बड़े पैमाने पर हो रही 'मास जॉइनिंग' को लेकर भाजपा नेतृत्व ने बाद में चयनात्मक प्रवेश की नीति अपनाने का संकेत दिया। इसका राजनीतिक संदेश

साफ था कि तृणमूल को कमजोर करने के लिए उसके नेताओं का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन भाजपा को तृणमूल की राजनीतिक संस्कृति में बदलाव नहीं है।

सुवेंदु अधिकारी इसका महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। तृणमूल से भाजपा में आए, नंदीग्राम में ममता बनर्जी को हराया और बाद में विधानसभा में विपक्ष के नेता बने। लेकिन भाजपा ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाकर पूरी पार्टी को किसी एक आयातित चेहरे के पीछे खड़ा नहीं किया। यहीं मध्य प्रदेश और बंगाल की रणनीतियां एक-दूसरे से जुड़ती हैं। मध्य प्रदेश ने भाजपा को सत्ता के लिए बड़े पैमाने पर राजनीतिक विस्तार का अनुभव दिया, बंगाल में पार्टी ने उसी अनुभव की सीमाओं को समझते हुए विस्तार और संगठन के बीच संतुलन साधने की कोशिश

की। किसी दूसरे दल के नेता को साथ लेना आसान है, लेकिन उसे अपनी संगठनात्मक संस्कृति में आत्मसात करना कठिन। भाजपा के लिए चुनौती यही है कि नए चेहरे आए, चुनावी समीकरण बदलें, लेकिन पुराने कार्यकर्ता और मूल संगठन हाशिये पर न जाएं। दरअसल बंगाल में भाजपा के सामने केवल तृणमूल को हराने की चुनौती नहीं है। उससे बड़ी चुनौती है - तृणमूल को हराते हुए स्वयं तृणमूल जैसी न हो जाना। यही मध्य प्रदेश की प्रयोगशाला से निकला सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक सबक है। नेता चुनाव जिता सकता है, लेकिन संगठन पार्टी को टिकाता है। बाहर से आया जनाधार किसी सीट का समीकरण बदल सकता है, लेकिन वर्षों से खड़ा कार्यकर्ता ही पार्टी की स्थायी जमीन तैयार करता है। इसलिए मध्य प्रदेश को भाजपा

की 'रिसर्च सेंटर' कहना केवल एक रूपक नहीं है। सत्ता परिवर्तन, दल-बदल, पुराने और नए नेताओं का समायोजन, नेतृत्व में बदलाव और संगठन की पुनर्संरचना - इन सबके अनुभवों ने भाजपा की कार्यशैली को लगातार आकार दिया है।

पश्चिम बंगाल उसी सीख का अगला अध्याय दिखाई देता है - जहां भाजपा विस्तार चाहती है, लेकिन अपनी पहचान की कीमत पर नहीं। आखिर किसी भी राजनीतिक दल की सबसे बड़ी सफलता केवल यह नहीं कि वह विरोधी को हरा दे बल्कि असली सफलता तब है जब वह विरोधी की जमीन पर अपनी अलग राजनीतिक संस्कृति खड़ी कर दे। मध्य प्रदेश ने भाजपा को सत्ता और संगठन का संतुलन सिखाया है और पश्चिम बंगाल उस संतुलन की अगली परीक्षा है।

निष्पक्षता-विश्वसनीयता एवं जनहित का संवाहक

श्रमसाधना

संपादकीय

जल्दी में बनाया गया वो इंफ्रास्ट्रक्चर किस काम का, जो टिका ही नहीं?

ये सच है कि देश में इंफ्रास्ट्रक्चर का बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ है। लेकिन परियोजनाओं के पूरा होने के चंद दिनों में ही उनमें लगातार सामने आ रही खामियां चिंता का विषय हैं। भारी-भरकम बजट से तैयार और हाल ही में शुरू हुए लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेस-वे और गंगा एक्सप्रेस-वे में सर्फेस स्लिपेज, दरारें पड़ने, जमीन धंसने और गड्ढे होने की कई घटनाएं सामने आई हैं।

इससे पहले दिल्ली-देहरादून और दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे में भी ऐसा ही हुआ था। इन घटनाओं में हुआ आर्थिक नुकसान करोड़ों में है, लेकिन इससे जनता और सरकार के बीच आई भरोसे की कमी कहीं ज्यादा बड़ी क्षति है।

3 मई 2026 की रात भागलपुर के पास विक्रमशिला सेतु का 33 मीटर लंबा स्लैब टूटकर गिर गया। 4.7 किलोमीटर लंबे पुल के दो हिस्सों में बंटने से दक्षिण और उत्तर बिहार का सड़क-लिंक टूट गया। जब तक सेना और बीआरओ ने मिलकर बैली ब्रिज नहीं बनाया, यात्रियों को 161 किलोमीटर लंबे वैकल्पिक मार्ग से जाना पड़ा और फिर नावों का सहारा लेना पड़ा।

2022 से 2024 के बीच अगुवानी से सुल्तानगंज के बीच बन रहा पुल भी तीन बार ढहा। मई 2025 में केरल में एनएच-66 के रामानाडुकरा-वल्लचेरी स्ट्रेच पर प्रोजेक्ट पूरा होने वाला ही था कि एक रीइन्फोर्सड अर्थ वॉल ढह गई।

अगस्त 2025 में हिमाचल प्रदेश और पंजाब के बीच चक्की ब्रिज कॉरिडोर पर कुछ महीने पहले ही बनी 100 मीटर लंबी प्रोटेक्शन वॉल टूट गई। हाल ही में मध्य रेलवे (सीआर) के भोरघाट सेक्शन में ठाकुरवाड़ी और मंकी हिल के बीच हुए भूस्खलन ने भारी क्षति पहुंचाई। 50-60 मीटर रेलवे लाइन बह गई। 30 ट्रेनें रद्द हुईं।

ये अलग-अलग जगहों पर दुर्भाग्यवश हुए मामले नहीं हैं। भू-तकनीकी जांच की कमी, ग्राउंड-इम्प्रूवमेंट उपायों की अनदेखी, ड्रेनेज के पर्याप्त इंतजाम नहीं करना, ऐसे इलाकों में रीइन्फोर्सड-सॉइल वॉल तकनीक का इस्तेमाल, जहां वह उपयुक्त ही नहीं थी- ये ऐसी खामियां हैं, जिन्हें इन घटनाओं का कारण माना जा सकता है।

एक अन्य बड़ा कारण डिजाइनरों, कंपनियों, स्वतंत्र इंजीनियरों और एनएचआई के फील्ड कर्मचारियों के बीच सुपरवाइजरी ढांचे का इतना बिखरा हुआ होना है कि कुछ गलत होता है तो किसी की जिम्मेदारी तय नहीं की जा सकती।

जिस दीवार, सड़क या पुल के हिस्से को ढहना ही नहीं चाहिए था, उसे दोबारा बनाने में खर्च हुआ हर रुपया वो है, जो नया इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने या मौजूदा ढांचों की मरम्मत में काम आ सकता था। इसमें बहुत-सी अप्रत्यक्ष लागत भी जुड़ जाती है। मसलन, डायवर्जन के फेर में माल ढुलाई में देरी होती है, घंटों के अतिरिक्त चक्कर में उत्पादकता घटती है और जिन कामों के लिए पुल बने थे, वे अब फिशिंग बोट से करने पड़ते हैं। चूंकि सरकारी टेंडर सबसे कम बोली लगाने वाले ठेकेदार को दिए जाते हैं, इसलिए गुणवत्ता प्रभावित होती है। जो ठेकेदार बहुत कम बोली लगाकर प्रोजेक्ट हासिल करते हैं, उनके पास मुनाफा निकालने का एक ही रास्ता बचता है- मटेरियल, जमीन की जांच और निर्माण कार्य में कटौती।

प्रान्तीय कार्यालय : 76 शबरी कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर
जोन-2 भोपाल, फोन : 0755-2579530

प्रान्तीय ब्यूरो प्रमुख : एल.एन. तवर, 9827781209

प्रान्तीय ब्यूरो : डॉ. जानकी अहिरवार 9406580345

Email:shramsadhnagwl@gmail.com

सही चुनाव : सोचें, लिखें, सीखें

डॉ. विजय गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बहुत तेजी से शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। यह कठिन विषयों को समझा सकती है, प्रश्नों के उत्तर दे सकती है, भाषाओं का अनुवाद कर सकती है, जानकारी का सार प्रस्तुत कर सकती है, नए विचार दे सकती है और कुछ ही क्षणों में एक सुव्यवस्थित लेख भी तैयार कर सकती है। विद्यार्थियों के लिए ये क्षमताएं अत्यंत उपयोगी हो सकती हैं। लेकिन इसके साथ शिक्षा के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी खड़ा हो रहा है-

यदि मशीन विद्यार्थी की जगह लिख सकती है, तो क्या विद्यार्थी स्वयं सोचना और लिखना सीखता रहेगा?

इसीलिए ढू के युग में एक महत्वपूर्ण शैक्षिक सिद्धांत उभर रहा है-विद्यार्थियों को स्वयं सोचना, लिखना और अपने विचार व्यक्त करना अवश्य सीखना चाहिए।

इसका अर्थ ढू को अस्वीकार करना नहीं है। उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि तकनीक सीखने का साधन बने, सीखने का विकल्प नहीं। लिखना केवल शब्दों को कागज पर उतारना नहीं

अक्सर लेखन को केवल संचार का माध्यम माना जाता है। वास्तव में लेखन सोचने की एक प्रक्रिया है। जब विद्यार्थी स्वयं किसी प्रश्न का उत्तर लिखता है, तो उसे पहले यह सोचना पड़ता है कि वह क्या जानता है, क्या नहीं जानता, कौन-सी जानकारी महत्वपूर्ण है और अलग-अलग विचारों को किस प्रकार जोड़ा जा सकता है। उसे अपने विचारों को क्रमबद्ध करना, उचित शब्दों का चयन करना और अपनी बात स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना पड़ता है।

यही मानसिक प्रक्रिया वास्तविक सीखने का हिस्सा है। यदि कोई विद्यार्थी केवल ढू से तैयार कराया गया एक सुंदर उत्तर कॉपी कर देता है, तो उसके पास एक अच्छा दिखने वाला उत्तर तो हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि उसके पीछे उतनी ही गहरी समझ भी हो।

कई बार लिखते समय होने वाली कठिनाई भी सीखने का हिस्सा होती है।

हर बौद्धिक संघर्ष को समाप्त कर देना शिक्षा नहीं है। कुछ संघर्ष सीखने के लिए आवश्यक होते हैं।

सहायता और विकल्प में अंतर एक उपयोगी शैक्षिक सहायक हो सकती है।

विद्यार्थी किसी कठिन अवधारणा को समझने के लिए ढू से सरल व्याख्या मांग सकता है। वह अभ्यास के लिए प्रश्न तैयार करवा सकता है, अपनी लिखी सामग्री में संभावित त्रुटियां पहचान सकता है या अपने प्रारूप को बेहतर बनाने के सुझाव ले सकता है।

इस प्रकार सीखने में सहायता कर सकती है।

लेकिन समस्या तब शुरू होती है जब सहायता, विकल्प बन जाती है।

मेरी लिखी सामग्री को बेहतर बनाने में मेरी मदद करो+ और +मेरे लिए सब कुछ लिख दो+-इन दोनों बातों में बहुत बड़ा अंतर है।

पहला सीखने की प्रक्रिया को मजबूत कर सकता है। दूसरा सीखने की प्रक्रिया को ही दरकिनार कर सकता है।

इसलिए सही चुनाव ढू बनाम शिक्षा नहीं है।

सही चुनाव है-

शिक्षा की सहायक बने, विद्यार्थी की जगह न ले।

लिखने से पहले सोचना अच्छा लेखन अच्छी सोच से शुरू होता है।

लेख लिखने से पहले विद्यार्थी को विषय समझना पड़ता है। उसे मुख्य प्रश्न पहचानना, संबंधित जानकारी जुटाना, तथ्यों और विचारों में अंतर करना और यह तय करना पड़ता है कि वह वास्तव में क्या कहना चाहता है।

इसीलिए स्वतंत्र लेखन इतना महत्वपूर्ण है।

जब विद्यार्थी स्वयं लिखता है, तो शिक्षक को भी उसकी सोच और समझ का वास्तविक पता चलता है। उसकी लिखावट और उत्तर उसके

सीखने की प्रक्रिया का एक दर्पण बन जाते हैं।

विद्यार्थी की गलतियां भी शिक्षाप्रद होती हैं। गलत व्याख्या बता सकती है कि कोई अवधारणा अभी पूरी तरह समझी नहीं गई है। कमजोर तर्क उसके चिंतन में मौजूद कमी को सामने ला सकता है।

यदि हर गलती को अपने आप सुधार दे, तो शिक्षक को विद्यार्थी की वास्तविक सीखने की स्थिति समझने में कठिनाई हो सकती है।

कक्षा सोचने की जगह बनी रहे शिक्षा का उद्देश्य केवल सही उत्तर तैयार करना नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्ति तैयार करना है जो सही प्रश्न पूछ सके, प्रमाणों का विश्लेषण कर सके, नई परिस्थितियों में समस्याओं का समाधान कर सके और अपने विचार तर्क के साथ प्रस्तुत कर सके।

जितनी तेजी से मशीनें उत्तर देंगी, उतनी ही अधिक आवश्यकता मानव विवेक की होगी।

विद्यार्थियों को सीखना चाहिए-

- सही प्रश्न कैसे पूछें;
- जानकारी की विश्वसनीयता कैसे जांचें;
- गलत दावों को कैसे पहचानें;
- विभिन्न विचारों की तुलना कैसे करें;
- तार्किक तर्क कैसे तैयार करें;
- किसी विचार को अपने शब्दों में कैसे समझाएं;
- प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष कैसे निकालें;
- और अपनी गलतियों से कैसे सीखें।

ये क्षमताएं केवल तैयार उत्तर प्राप्त करने से विकसित नहीं होतीं।

अपनी आवाज में लिखने का महत्व लेखन विद्यार्थी को एक और महत्वपूर्ण चीज देता है-उसकी अपनी आवाज।

हर विद्यार्थी की सोच, अनुभव, रुचियां और दुनिया को देखने का दृष्टिकोण अलग होता है। एक ही विषय पर दो विद्यार्थी अलग-अलग विचार

व्यक्त कर सकते हैं।

शिक्षा को इस व्यक्तिगत विशिष्टता को प्रोत्साहित करना चाहिए।

यदि हर विद्यार्थी अपनी लेखन सामग्री ढू से तैयार कराने लगे, तो भाषा भले ही बहुत अच्छी और व्यवस्थित हो, लेकिन विद्यार्थी की अपनी आवाज धीरे-धीरे अदृश्य हो सकती है।

कभी-कभी विद्यार्थी का अपना सरल और अपूर्ण पैराग्राफ भी उसकी वास्तविक समझ के बारे में उस शानदार पैराग्राफ से अधिक बता सकता है जिसे मशीन ने तैयार किया हो।

शिक्षकों की नई जिम्मेदारी ढू के आने से शिक्षकों का महत्व कम नहीं हुआ है। कई मायनों में उनकी जिम्मेदारी और बढ़ गई है।

अब शिक्षकों को केवल अंतिम उत्तर पर ही नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया पर भी ध्यान देना होगा।

कक्षा में चर्चा, मौखिक व्याख्या, स्वतंत्र लेखन, प्रारूप तैयार करना, परियोजना कार्य, समस्या-समाधान गतिविधियां और व्यक्तिगत प्रश्न यह जानने में मदद कर सकते हैं कि विद्यार्थी ने वास्तव में क्या सीखा है।

यदि कोई विद्यार्थी बहुत उच्च स्तर का लेख प्रस्तुत करता है, तो शिक्षक उससे उसके मुख्य तर्कों की व्याख्या करने, प्रमाण प्रस्तुत करने या अपने शब्दों में विषय समझाने के लिए कह सकता है।

उद्देश्य ढू से भय पैदा करना नहीं है। उद्देश्य है-

ईमानदार और वास्तविक शिक्षा को बनाए रखना।

माता-पिता की भूमिका माता-पिता स्वाभाविक रूप से चाहते हैं कि उनके बच्चे सफल हों। लेकिन ढू के युग में सफलता का अर्थ केवल सुंदर अंतिम उत्तर नहीं होना चाहिए।

माता-पिता बच्चों को पहले स्वयं प्रयास करने और उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर तकनीक की सहायता लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

माता-पिता वृद्धाश्रम में, बच्चे विदेश में... क्या यही है आधुनिक सफलता की कीमत?

वैश्विक स्तर पर किसी भी सभ्य समाज की असली पहचान उसकी ऊंची इमारतों, चमकती सड़कों या आर्थिक समृद्धि से नहीं, बल्कि इस बात से होती है कि वह अपने बुजुर्गों, कमजोरों और निर्भर लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है। आज दुनिया तेजी से बदल रही है। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवार ले रहे हैं, बच्चे शिक्षा और रोजगार के लिए महानगरों तथा विदेशों में बस रहे हैं और जीवन की भागदौड़ में कहीं माता-पिता की वह भावनात्मक जगह सिकुड़ती जा रही है, जो कभी परिवार की नींव हुआ करती थी। सबसे पीड़ादायक स्थिति तब सामने आती है, जब जिन माता-पिता ने अपनी संतान की शिक्षा, करियर और भविष्य के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया, वही संतान उनके जीवन के अंतिम पड़ाव पर उनसे दूरी बना लेती है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनार्थी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि, वृद्धाश्रमों की बढ़ती आवश्यकता माता-पिता को अकेला छोड़ देने की घटनाएं और बुजुर्गों के साथ अमानवीय व्यवहार से जुड़े वायरल वीडियो केवल व्यक्तिगत त्रासदियां नहीं

हैं; वे समाज की बदलती संवेदनशीलता पर गंभीर प्रश्नचिह्न हैं। क्या आधुनिकता की कीमत अपनी जड़ों को भूल जाना है? क्या आर्थिक सफलता का अर्थ उस हाथ को भूल जाना है, जिसने हमें चलना सिखाया था? इसी व्यापक सामाजिक और संवैधानिक चिंता के बीच 7 सितंबर 2026 को सुप्रीम कोर्ट में बुजुर्गों के अधिकारों से जुड़ी वर्ष 2016 से लंबित जनहित याचिका पर हुई सुनवाई बेहद महत्वपूर्ण बन गई है। अदालत ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से वृद्धाश्रमों तथा वरिष्ठ नागरिकों को उपलब्ध सुविधाओं की ताजा स्थिति रिपोर्ट मांगी है।

साथियों बात अगर हम सुप्रीम कोर्ट की दस्तक- क्या देश अपने बुजुर्गों के लिए सचमुच तैयार है? इसको समझने की करें तो, 7 सितंबर 2026 की सुनवाई में मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना शामिल थे, ने लंबे समय से लंबित इस मामले को फिर गंभीरता से उठाया। वर्ष 2016 में पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री और वरिष्ठ अधिवक्ता द्वारा दायर जनहित याचिका

का मूल प्रश्न केवल वृद्धाश्रमों की संख्या तक सीमित नहीं है; यह उस व्यापक अधिकार से जुड़ा है जिसके तहत प्रत्येक बुजुर्ग को सम्मान, सुरक्षा, आश्रय, स्वास्थ्य सुविधा और गरिमापूर्ण जीवन मिलना चाहिए। अदालत ने अटॉर्नी जनरल को निर्देश दिया कि सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के एडवोकेट जनरल तथा स्टैंडिंग काउंसिल से संपर्क कर वृद्धाश्रमों की स्थापना और वहां उपलब्ध सुविधाओं की ताजा जानकारी जुटाई जाए। राज्यों को संबंधित पत्र मिलने के बाद लगभग चार सप्ताह के भीतर रिपोर्ट देने को कहा गया है। यह निर्देश महज प्रशासनिक औपचारिकता नहीं माना जाना चाहिए। इसके पीछे एक बुनियादी सवाल है, कागजों पर बुजुर्गों के लिए कितनी योजनाएं हैं और जमीन पर वास्तव में उन्हें सटीकता से कितना सहारा मिल रहा है?

साथियों, बात अगर हम अनुच्छेद 21 बुजुर्गों के लिए सिर्फ जीवन नहीं, गरिमा का जीवन को समझने की करें तो भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा करता

है। बुजुर्गों के संदर्भ में यह सवाल और भी व्यापक हो जाता है, क्या केवल सांस लेते रहना ही जीवन है, या जीवन का अर्थ सम्मान, सुरक्षा, स्वास्थ्य, आश्रय और गरिमा के साथ जीना भी है? वर्ष 2016 की इस जनहित याचिका में इसी व्यापक दृष्टिकोण से बुजुर्गों के लिए आश्रय, पर्याप्त पेंशन, जेरियाट्रिक चिकित्सा देखभाल और स्वास्थ्य सुविधाओं की मांग उठाई गई है। साथ ही मेंटेनेंस एंड वेलफेयर ऑफ पेंशेंट्स एंड सीनियर सिटीजन एक्ट, 2007 के प्रभावी क्रियान्वयन पर भी जोर दिया गया है। इस कानून की धारा 19 में राज्यों द्वारा चरणबद्ध तरीके से प्रत्येक जिले में कम-से-कम एक वृद्धाश्रम स्थापित करने का प्रावधान किया गया है, जिसमें बेसहारा बुजुर्गों के लिए आवास की व्यवस्था हो। इसलिए प्रश्न केवल यह नहीं कि वृद्धाश्रम मौजूद हैं या नहीं। असली प्रश्न यह है कि क्या वे रहने योग्य हैं? क्या वहां पर्याप्त भोजन, स्वच्छता, सुरक्षा, दवाइयां, चिकित्सकीय देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और उचित सटीक मानवीय वातावरण उपलब्ध है?

क्या महिलाओं को हरतालिका तीज के दिन बाल धोने चाहिए? जानिए क्या है नियम

हरतालिका तीज हिंदू धर्म के प्रमुख व्रतों में से एक है, जिसे सुहागिन महिलाएं पति की लंबी उम्र और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना के लिए रखती हैं। इस दिन महिलाएं भगवान शिव और माता पार्वती की विधि-विधान से पूजा करती हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, माता पार्वती ने भी भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तप किया था। इसी वजह से हरतालिका तीज का व्रत महिलाओं के लिए विशेष महत्व रखता है। इस दिन महिलाएं पूरे दिन व्रत रखकर माता पार्वती और भगवान शिव से अपने वैवाहिक जीवन की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं।

हरतालिका तीज का व्रत पति की लंबी उम्र, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी दांपत्य जीवन की कामना से रखा जाता है। मान्यता है कि इस व्रत को श्रद्धा और नियमपूर्वक करने से भगवान शिव और माता पार्वती का आशीर्वाद प्राप्त होता है। कई जगहों पर अविवाहित कन्याएं भी अच्छे जीवनसाथी की कामना से ये व्रत रखती हैं। इस दिन महिलाएं सोलह श्रृंगार करती हैं और माता पार्वती को सुहाग की सामग्री अर्पित कर उनकी पूजा करती हैं।

हरतालिका तीज 2026 कब है?

साल 2026 में हरतालिका तीज का व्रत 14 सितंबर, सोमवार को रखा जाएगा। पंचांग के अनुसार, तृतीया तिथि 13 सितंबर 2026 को सुबह 7 बजकर 8 मिनट से शुरू होगी और 14 सितंबर को सुबह 7 बजकर 6 मिनट तक रहेगी। 14 सितंबर को प्रातःकाल पूजा का मुहूर्त सुबह 6 बजकर 12 मिनट से 7 बजकर 6



हरतालिका तीज 2026

मिनट तक रहेगा।

क्या हरतालिका तीज के दिन बाल धोने चाहिए?

हरतालिका तीज के दिन बाल धोने को लेकर अलग-अलग जगहों पर अलग मान्यताएं हैं। सामान्य धार्मिक परंपरा के अनुसार, व्रत रखने वाली महिलाओं को हरतालिका तीज से

एक दिन पहले ही स्नान करके अच्छी तरह बाल धो लेने चाहिए। ऐसा इसलिए माना जाता है ताकि व्रत वाले दिन शरीर की शुद्धि और पूजा से जुड़े जरूरी काम पहले ही पूरे हो जाएं।

व्रत से एक दिन पहले धोएं बाल

हरतालिका तीज व्रत रखने वाली महिलाओं के लिए एक दिन पहले स्नान करके बाल धोना सबसे उचित माना जाता है। तृतीया तिथि के आरंभ होने या व्रत से पहले नहाय-खाय के दिन महिलाएं अपने बाल धो सकती हैं। इससे व्रत वाले दिन बाल धोने की जरूरत नहीं पड़ती और महिलाएं पूजा-पाठ पर ध्यान दे सकती हैं।

व्रत वाले दिन बाल धोने का क्या नियम है?

हरतालिका तीज का व्रत कई

परंपराओं में निर्जला माना जाता है। इस दिन महिलाएं अन्न और जल ग्रहण नहीं करती हैं। कई जगहों पर व्रत की पवित्रता और धार्मिक नियमों को ध्यान में रखते हुए व्रत वाले दिन बाल न धोने की परंपरा है। इसलिए सामान्य तौर पर बालों को एक दिन पहले ही धो लेना उचित माना जाता है।

हालांकि, अगर किसी विशेष परिस्थिति में व्रत वाले दिन सुबह

स्नान के साथ बाल धोना जरूरी हो या परिवार की परंपरा में ऐसा करने का विधान हो, तो पूजा से पहले बाल धोने की मान्यता भी कुछ जगहों पर मिलती है। ऐसे में अपने घर की परंपरा और स्थानीय मान्यता का पालन करना बेहतर माना जाता है।

हरतालिका तीज पर नाखून काटना चाहिए या नहीं?

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, हरतालिका तीज के दिन नाखून काटना, बाल काटना या शेविंग करना वर्जित माना जाता है। इसी तरह व्रत वाले दिन बाल धोने से भी कई परंपराओं में बचने की सलाह दी जाती है। इसलिए अगर नाखून काटने या बालों से जुड़ी कोई ग्लिमिंग करनी है, तो इसे व्रत से एक दिन पहले ही पूरा कर लेना बेहतर माना जाता है। इस तरह हरतालिका तीज के दिन महिलाओं को पूजा, व्रत और धार्मिक नियमों पर ध्यान देना चाहिए। बाल धोने या नाखून काटने जैसे काम पहले ही कर लेने से व्रत के दौरान इन चीजों की जरूरत नहीं पड़ती।



राधा अष्टमी हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को राधा रानी का धरती पर प्राकट्य हुआ था। इस दिन भक्त राधा रानी की पूजा-अर्चना और व्रत करते हैं। राधा रानी को प्रेम, भक्ति और निस्वार्थ समर्पण का प्रतीक माना जाता है। यही वजह है कि राधा अष्टमी का पर्व भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों के लिए भी बेहद खास माना जाता है।

मान्यता है कि राधा रानी का प्राकट्य मध्याह्न यानी दोपहर के समय महाराज वृषभानु की यज्ञ भूमि में हुआ था। राधा अष्टमी का पर्व खासतौर पर ब्रज, बरसाना

राधा अष्टमी का जन्माष्टमी से क्या है संबंध? जानें क्यों अधूरा माना जाता है व्रत

और वृंदावन में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन राधा-कृष्ण की पूजा करने से भक्तों को श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त होने की मान्यता है। धार्मिक मान्यताओं में राधा अष्टमी का संबंध जन्माष्टमी से भी जोड़ा गया है और कहा जाता है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के व्रत-साधना का पूर्ण फल राधा रानी की आराधना के बिना अधूरा माना जाता है।

राधा अष्टमी 2026 में कब है?

साल 2026 में राधा अष्टमी का व्रत शनिवार, 19 सितंबर को रखा जाएगा। पंचांग के अनुसार, अष्टमी तिथि 18 सितंबर को दोपहर 1 बजे से शुरू होगी और 19 सितंबर को दोपहर 3 बजकर 26 मिनट तक रहेगी। राधा रानी की पूजा मध्याह्न काल में करने की परंपरा है। इस दिन पूजा का शुभ मुहूर्त सुबह 11 बजकर 1 मिनट से दोपहर 1 बजकर 28 मिनट तक रहेगा।



राधा अष्टमी का महत्व

राधा अष्टमी का जन्माष्टमी से क्या संबंध है?

धार्मिक मान्यता के अनुसार, राधा अष्टमी भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय राधा रानी के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाई जाती है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को राधा रानी महाराज वृषभानु की यज्ञ भूमि से प्रकट हुई थीं। इसी वजह से इस दिन को राधा रानी के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण की आराधना राधा रानी के

बिना पूर्ण नहीं होती। इसी आधार पर कहा जाता है कि जन्माष्टमी पर किया गया व्रत और साधना तब तक पूरी नहीं मानी जाती, जब तक राधा अष्टमी पर राधा रानी का व्रत और पूजन न किया जाए। भक्त राधा रानी की पूजा करके उनके प्रेम और भक्ति का स्मरण करते हैं और श्रीकृष्ण की कृपा की कामना करते हैं।

राधा अष्टमी पर कैसे करें पूजा?

राधा अष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र पहनकर व्रत का संकल्प लें। इसके बाद घर के मंदिर में चौकी पर लाल या पीले रंग का कपड़ा बिछाकर राधा-कृष्ण की मूर्ति स्थापित करें। राधा रानी और भगवान कृष्ण को पंचामृत से स्नान कराएं। इसके बाद फल, फूल, रोली, चंदन और श्रृंगार की सामग्री अर्पित करें।



पूजा के दौरान राधा रानी का ध्यान करते हुए विधि-विधान से उनकी आराधना करें। इसके बाद उन्हें खीर और मिठाइयों का भोग लगाया जा सकता है। मान्यता है कि श्रद्धा और भक्ति के साथ राधा रानी की पूजा करने से उनका आशीर्वाद मिलता है और भगवान श्रीकृष्ण की कृपा भी प्राप्त होती है।

गणेश उत्सव भगवान गणेश को समर्पित प्रमुख हिंदू त्योहारों में से एक है। इस पर्व की शुरुआत गणेश चतुर्थी से होती है और भक्त घरों और पंडालों में भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित कर विधि-विधान से उनकी पूजा करते हैं। साल 2026 में गणेश चतुर्थी 14 सितंबर, सोमवार को मनाई जाएगी। भगवान गणेश को प्रथम पूज्य और विघ्नहर्ता माना जाता है, इसलिए किसी भी शुभ काम से पहले उनकी पूजा करने की परंपरा है। गणेश उत्सव के दौरान भक्त गणपति बप्पा से सुख-समृद्धि और जीवन के सभी विघ्न दूर करने की कामना करते हैं।

गणेश चतुर्थी के दिन भक्त भगवान गणेश की प्रतिमा को पूरे

महाभारत लिखते-लिखते गणेश जी को क्यों तोड़ना पड़ गया था अपना दांत? जानें इसकी कथा

उत्साह के साथ घर लेकर आते हैं। इसके बाद अपनी परंपरा के अनुसार कई लोग डेढ़ दिन, तीन दिन, पांच दिन, सात दिन या 10 दिन तक गणपति की पूजा करते हैं। अनंत चतुर्दशी के दिन गणेश जी की प्रतिमा का विसर्जन किया जाता है। गणपति विसर्जन के पीछे भी एक पौराणिक मान्यता जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि भगवान गणेश ने महाभारत का लेखन पूरा करने के बाद अपने शरीर की गर्मी शांत करने के लिए मिट्टी में अपने शरीर को ठंडा किया था। इसी से गणेश प्रतिमा के विसर्जन की परंपरा को जोड़ा जाता है।

भगवान गणेश से जुड़ी ऐसी ही कई पौराणिक कथाएं हैं, जिनमें उनके रूप, बुद्धि और त्याग का वर्णन मिलता है। इन्हीं में से एक कथा उनके टूटे हुए दांत से जुड़ी है। आपने भगवान गणेश की तस्वीरों और प्रतिमाओं में अक्सर उन्हें एक दांत के साथ देखा होगा। लेकिन क्या आप जानते हैं कि गणेश जी का एक दांत कैसे टूटा और इसका संबंध महाभारत के लेखन से कैसे जुड़ा है?

गणेश जी ने तोड़ा था अपना दांत

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, महाभारत की रचना महर्षि वेद व्यास ने की थी, लेकिन इसे



लिपिबद्ध करने का काम भगवान गणेश ने किया था। जब महर्षि वेद व्यास ने इस महाग्रंथ को लिखवाने का निर्णय लिया, तो उन्होंने भगवान गणेश को इसका लेखक चुना। ऐसा कहा जाता है कि गणेश जी ने महर्षि वेद व्यास के सामने एक शर्त रखी थी। उन्होंने कहा कि व्यास जी को महाभारत का वाचन बिना रुके लगातार करना होगा। अगर वे बीच में रुक गए तो गणेश जी भी लिखना बंद कर देंगे।

व्यास जी ने भी गणेश जी के सामने अपनी एक शर्त रख दी। उन्होंने कहा कि गणेश जी प्रत्येक श्लोक को उसका अर्थ समझने के बाद ही लिखेंगे। गणेश जी ने उनकी यह शर्त स्वीकार कर ली और महाभारत का लेखन शुरू हो गया।

कलम टूटने पर तोड़ लिया अपना दांत

महाभारत के श्लोकों का लेखन लगातार चल रहा था। इसी दौरान एक समय ऐसा आया जब भगवान गणेश की लेखनी यानी कलम टूट गई। उनके सामने लेखन का काम रुकने की स्थिति पैदा हो गई, लेकिन व्यास जी की शर्त के अनुसार गणेश जी लिखना बीच में नहीं रोक सकते थे।

ऐसे में गणेश जी ने बिना समय गंवाए अपना एक दांत तोड़ लिया। उन्होंने उसी दांत को लेखनी की तरह इस्तेमाल किया और महाभारत लिखना जारी रखा। इस तरह लेखन कार्य में कोई रुकावट नहीं आई और महर्षि वेद व्यास

द्वारा बोले गए श्लोकों को गणेश जी लगातार लिपिबद्ध करते रहे।

गणेश जी के टूटे दांत का यही है रहस्य

इसी पौराणिक कथा की वजह से भगवान गणेश को 'एकदंत' भी कहा जाता है। उनका एक दांत टूटने की यह कथा त्याग, समर्पण और अपने संकल्प को पूरा करने की भावना से जुड़ी मानी जाती है। मान्यता के अनुसार, महर्षि वेद व्यास ने महाभारत की कथा का वाचन किया था और भगवान गणेश ने उसे लिखित रूप दिया था।

पौराणिक

मान्यता के अनुसार, गणेश जी ने महाभारत का लेखन उत्तराखंड के चमोली जिले में बद्रीनाथ धाम के पास स्थित माणा गांव की गणेश गुफा में बैठकर किया था। वहीं पास में व्यास गुफा भी है, जहां महर्षि वेद व्यास के बैठकर महाभारत की कथा सुनाने की मान्यता है। यह स्थान पवित्र सरस्वती नदी के तट के पास स्थित है।



आजकल कई लोग पेट में गैस बनने की समस्या से परेशान रहते हैं। कुछ लोगों को खाना खाने के बाद पेट फूलने लगता है, डकारें आती हैं या पेट में भारीपन महसूस होता है। कई बार यह परेशानी थोड़ी देर में ठीक हो जाती है, लेकिन कुछ लोगों को बार-बार गैस बनने की शिकायत रहती है। ऐसे में रोजमर्रा की आदतों पर ध्यान देना जरूरी हो जाता है। पेट में गैस बनना एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन जब यह जरूरत से ज्यादा बनने लगे या बार-बार परेशानी पैदा करे, तो इसकी वजह जानना जरूरी है।

पेट में गैस आमतौर पर खाना पचने के दौरान बनती है। इसके अलावा खाने या पीने समय हवा पेट में चली जाए, तब भी गैस बन

सकती है। कई बार कुछ खाने की चीजें और रोज की कुछ आदतें भी इस परेशानी को बढ़ा देती हैं। अगर गैस के साथ तेज दर्द, लगातार पेट फूलना या दूसरी दिक्कतें भी होने लगे, तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। आइए जानते हैं बार-बार पेट में गैस किन आदतों की वजह से बनती है, इससे राहत पाने के लिए क्या किया जा सकता है और कब यह किसी बीमारी का संकेत हो सकती है।

किन आदतों से बार-बार पेट में गैस बनती है?

कई बार हमारी रोज की कुछ आदतें पेट में ज्यादा गैस बनने की वजह बन जाती हैं। बहुत जल्दी-



पेट में गैस क्यों बनती है?

जल्दी खाना खाने या खाते समय ज्यादा बात करने से पेट में हवा चली जाती है, जिससे गैस बन सकती है। च्यूइंग गम चबाने, हार्ड कैन्डी चूसने और स्ट्रॉ से बार-बार ड्रिंक पीने से भी ज्यादा हवा पेट में पहुंच सकती है।

इसके अलावा कोल्ड ड्रिंक और दूसरी कार्बोनेटेड ड्रिंक पीने से भी गैस बढ़ सकती है। कुछ लोगों को बीन्स, पत्तागोभी, ब्रोकली, प्याज, नाशपाती, सेब, दूध या डेयरी से बनी चीजें खाने के बाद भी गैस की शिकायत हो सकती है।

हर व्यक्ति का शरीर अलग होता है, इसलिए जिन चीजों को खाने के बाद बार-बार गैस बनती है, उन्हें पहचानना और जरूरत पड़ने पर कम करना फायदेमंद हो सकता है।

पेट की गैस से राहत पाने के लिए क्या करें?

अगर आपको बार-बार गैस बनती है, तो खाना धीरे-धीरे खाएं और उसे अच्छी तरह चबाकर खाएं। खाते समय बहुत ज्यादा बात करने से बचें, ताकि पेट में हवा कम जाए। अगर किसी खास खाने

की चीज से हर बार गैस बनती है, तो उसे कुछ समय के लिए कम करके देखें। कोल्ड ड्रिंक और दूसरी कार्बोनेटेड ड्रिंक कम पिएं।

दिनभर पर्याप्त पानी पिएं और खाने के बाद थोड़ी देर टहलें। अगर आपको दूध या डेयरी की चीजें खाने के बाद गैस बनती है, तो डॉक्टर की सलाह लेकर इसकी वजह जानें। अगर परेशानी बार-बार हो रही है, तो डॉक्टर से जांच कराना बेहतर रहेगा।

पेट की गैस कब किसी बीमारी का संकेत हो सकती है?

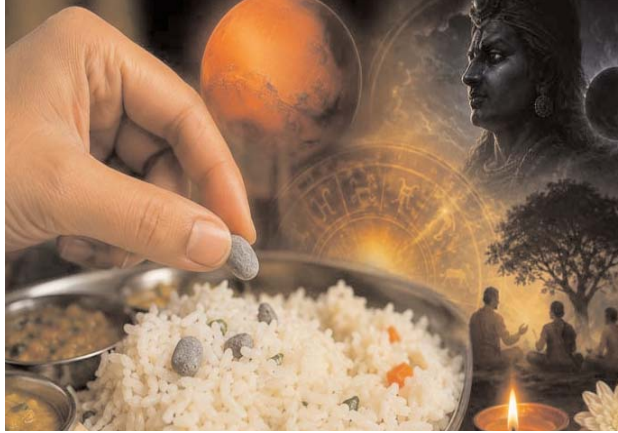
अगर पेट में गैस के साथ तेज दर्द, लगातार पेट फूलना, बार-बार दस्त या कब्ज, बिना वजन कम होना, उल्टी, मल में खून आना या निगलने में परेशानी जैसी दिक्कतें भी हों, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।



भोजन में बार-बार कंकड़ निकलना क्या देता है संकेत? शकुन शास्त्र में बताए गए हैं इसके विशेष अर्थ, जानें क्या करें

भोजन करते समय अचानक कंकड़ निकल आना एक ऐसी घटना है, जिसका सामना लगभग हर व्यक्ति कभी न कभी करता है। अधिकांश लोग इसे केवल अनाज की सफाई में हुई कमी मानकर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन शकुन शास्त्र में इसे कुछ विशेष संकेतों से जोड़कर देखा गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यदि किसी व्यक्ति के भोजन में बार-बार कंकड़, बाल या अन्य अशुद्ध वस्तुएं निकलती हैं, तो यह केवल संयोग नहीं माना जाता, बल्कि इसे ग्रहों की स्थिति और जीवन में आने वाली चुनौतियों का संकेत भी माना जाता है। हालांकि, इसके साथ यह भी जरूरी है कि भोजन की गुणवत्ता, अनाज की सफाई और रसोई की स्वच्छता को

प्राथमिकता दी जाए। **मंगल ग्रह की कमजोरी का माना जाता है संकेत** शकुन शास्त्र के अनुसार भोजन में बार-बार कंकड़ निकलना मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव का संकेत हो सकता है। ज्योतिष में मंगल को साहस, ऊर्जा, भूमि, पराक्रम और आत्मविश्वास का कारक माना गया है। मान्यता है कि जब कुंडली में मंगल कमजोर या अशुभ स्थिति में होता है, तो व्यक्ति को कार्यों में रुकावट, मानसिक तनाव, विवाद, दुर्घटना या अचानक आने वाली परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में धैर्य बनाए रखने और सकारात्मक सोच के साथ अपने कार्यों को पूरा करने की सलाह दी जाती है। **पितृ दोष से भी जोड़ी जाती है यह मान्यता**



धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भोजन में बार-बार कंकड़, बाल या अन्य अशुद्ध वस्तु मिलना पितृ दोष का संकेत भी माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यदि पूर्वज किसी कारणवश असंतुष्ट हों या उनसे जुड़े धार्मिक कर्तव्यों की अनदेखी की गई हो,

तो इस प्रकार के संकेत दिखाई दे सकते हैं। ऐसी स्थिति में पितरों का स्मरण करने, उनकी पसंद का भोजन श्रद्धापूर्वक अर्पित करने तथा परिवार की परंपराओं के अनुसार धार्मिक कार्य करने की सलाह दी जाती है। मान्यता है कि इससे पितरों का आशीर्वाद प्राप्त

होता है और जीवन में आने वाली बाधाएं कम हो सकती हैं।

राहु की स्थिति भी हो सकती है जिम्मेदार

ज्योतिष शास्त्र में राहु को भ्रम, तनाव और अचानक आने वाली समस्याओं का कारक माना गया है। मान्यता है कि यदि कुंडली में राहु कमजोर या अशुभ स्थिति में हो, तो व्यक्ति के जीवन में मानसिक अशांति, विवाद और अनावश्यक परेशानियां बढ़ सकती हैं। शकुन शास्त्र के अनुसार भोजन में बार-बार कंकड़ निकलना राहु के प्रभाव का भी संकेत माना जाता है। ऐसे में घर और शरीर की स्वच्छता बनाए रखना, सकारात्मक वातावरण में रहना तथा धार्मिक आस्था के अनुसार राहु शांति के उपाय करना लाभकारी माना गया है। कुछ ज्योतिषाचार्य चांदी धारण करने की भी सलाह देते हैं।

व्यावहारिक पक्ष को नजरअंदाज न करें

विशेषज्ञों का मानना है कि धार्मिक मान्यताओं के साथ-साथ व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान देना भी बेहद जरूरी है। यदि भोजन में बार-बार कंकड़ निकल रहे हैं, तो सबसे पहले अनाज की अच्छी तरह सफाई, गुणवत्ता की जांच और रसोई में स्वच्छता सुनिश्चित करनी चाहिए। कई बार यह समस्या केवल प्रसंस्करण या सफाई में कमी के कारण भी हो सकती है। ध्यान रखें- भोजन में कंकड़ निकलने से जुड़े ये संकेत धार्मिक और ज्योतिषीय मान्यताओं पर आधारित हैं। इन्हें आस्था के संदर्भ में देखा जाता है। किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले व्यावहारिक कारणों की जांच करना और आवश्यक सावधानी बरतना अधिक उचित माना जाता है।

बाल कटवाने से पहले करें यह छोटा सा उपाय, धार्मिक मान्यता के अनुसार मिलेगा शनि देव का आशीर्वाद

ज्योतिष शास्त्र में शरीर के प्रत्येक अंग का संबंध किसी न किसी ग्रह से माना गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, बाल और नाखून का संबंध शनि ग्रह से जुड़ा होता है। शनि देव को न्याय और कर्मफल का देवता कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि यदि बाल गलत समय या अशुभ दिन पर कटवाए जाएं तो इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और शनि ग्रह की स्थिति भी प्रभावित हो सकती है। इसलिए बाल कटवाने से जुड़े कुछ विशेष नियमों का पालन करने की सलाह दी जाती है।

मान्यता के अनुसार, शनिवार के दिन बाल कटवाने से बचना चाहिए। कहा जाता है कि इस दिन बाल कटवाने से शनि की बाधाएं बढ़ सकती हैं। शनि देव संयम, अनुशासन और धैर्य के प्रतीक माने



जाते हैं, इसलिए उनके दिन बालों का त्याग शुभ नहीं माना जाता। हालांकि, यह पूरी तरह धार्मिक और पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित है। ज्योतिष में एक सरल उपाय भी बताया गया है। मान्यता है कि जब भी बाल कटवाने जाएं, उससे पहले घर से निकलने से पहले अपने बालों में थोड़ा-सा कच्चा

दूध लगा लेना चाहिए। इसके बाद ही बाल कटवाने जाएं। धार्मिक विश्वास के अनुसार, कच्चा दूध मन और मस्तिष्क को शांत रखने के साथ नकारात्मक ऊर्जा को कम करने में सहायक माना जाता है। इससे शनि देव की कृपा बनी रहती है और जीवन में आने वाली बाधाएं कम हो सकती हैं।

ललिता से लेकर इन्दुलेखा तक, जानिए राधा रानी की प्रिय अष्टसखियों का दिव्य महत्व

भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी की दिव्य लीलाओं का वर्णन अनेक पुराणों और वैष्णव ग्रंथों में मिलता है। मान्यता है कि जब द्वापर युग में श्रीकृष्ण और राधा रानी ने अवतार लिया, तब गोलोक से उनकी सेवा और लीलाओं में सहयोग के लिए उनकी आठ प्रिय सहेलियां भी पृथ्वी पर अवतरित हुईं। इन्हें अष्टसखी कहा जाता है। प्रत्येक सखी का स्वभाव, गुण और सेवा का क्षेत्र अलग था, लेकिन सभी का एकमात्र उद्देश्य राधा-कृष्ण की सेवा और उनकी लीलाओं को सुचारु रूप से संपन्न कराना था।

ललिता और विशाखा थीं प्रमुख सखियां

अष्टसखियों में ललिता सखी को सबसे प्रमुख माना जाता है।

उनका स्वभाव चंचल, स्पष्टवादी और राधा रानी के प्रति पूर्ण समर्पित था। वहीं विशाखा सखी अपनी बुद्धिमत्ता, कलात्मक प्रतिभा और संदेशवाहक की भूमिका के लिए प्रसिद्ध थीं। वे राधा और श्रीकृष्ण के बीच प्रेम संदेशों का आदान-प्रदान करती थीं।

सेवा, कला और ज्ञान की अद्भुत मिसाल

चंपकलता सखी स्वादिष्ट भोजन बनाने और स्नेहमयी सेवा के लिए जानी जाती थीं। चित्रा सखी चित्रकला, संगीत और काव्य में निपुण थीं तथा राधा-कृष्ण की लीलाओं और खेलों का आयोजन करती थीं। तुंगविद्या सखी वेदों, संगीत और विभिन्न कलाओं की ज्ञाता थीं तथा अपने मधुर भजनों से राधा-कृष्ण को प्रसन्न करती थीं।

इन्दुलेखा की मधुर वाणी थी विशेष पहचान

इन्दुलेखा देवी अपनी मधुर वाणी, हंसमुख स्वभाव और चतुराई के लिए प्रसिद्ध थीं। वे राधा और श्रीकृष्ण के गुप्त संदेशों को सुरक्षित रूप से एक-दूसरे तक पहुंचाने का कार्य करती थीं और अपने हास्य-विनोद से वातावरण को आनंदमय बनाए रखती थीं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अष्टसखियां केवल सहेलियां ही नहीं, बल्कि राधा रानी की परम सेविकाएं और श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं की प्रमुख सहयोगी थीं। आज भी वृंदावन और बरसाना की भक्ति परंपरा में अष्टसखियों का विशेष महत्व माना जाता है और श्रद्धालु राधा-कृष्ण के साथ उनकी भी श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना करते हैं।

स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन से होगी हरित रेल क्रांति का आगाज

लेखक- विनोद कुमार सिंह
- प्रधानमंत्री मोदी हरियाणा के जींद-दिल्ली रेलखंड से स्वच्छ ऊर्जा, आत्मनिर्भर तकनीक और विकसित भारत की तेज रफ्तार का करेंगे शुभारम्भ

भारतीय रेल केवल देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक परिवहन तंत्र नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक प्रगति की जीवनरेखा भी है। लगभग डेढ़ शताब्दी पहले भाप के इंजनों से शुरू हुई इसकी यात्रा आज अत्याधुनिक तकनीकों के नए युग में प्रवेश कर चुकी है। वंदे भारत, अमृत भारत, समर्पित माल गलियारों, क्वच जैसी स्वदेशी सुरक्षा प्रणाली और व्यापक विद्युतीकरण के बाद अब भारतीय रेल हाइड्रोजन फ्यूल-सेल तकनीक के साथ एक और ऐतिहासिक उपलब्धि की दहलीज पर खड़ी है। गिगत दिनों दिल्ली-जींद रेलखंड पर स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन का सफल परीक्षण इस बात का

संकेत है कि भारत हरित, आत्मनिर्भर और भविष्य उन्मुख रेल व्यवस्था की दिशा में निर्णायक कदम बढ़ा चुका है। विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार भारतीय रेल की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन का शुभारंभ अगले सप्ताह प्रस्तावित है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हरियाणा से इसे हरी झंडी दिखाकर राष्ट्र को समर्पित कर सकते हैं। यद्यपि कार्यक्रम की औपचारिक घोषणा अभी शेष है, लेकिन सफल परीक्षण ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय रेल हरित ऊर्जा आधारित परिवहन के नए युग में प्रवेश करने के लिए तैयार है। यह केवल एक नई ट्रेन का शुभारंभ नहीं होगा, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और आत्मनिर्भर भारत की विकास यात्रा में एक नए अध्याय का उद्घोष भी होगा। आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन और कार्बन उत्सर्जन को चुनौती से जूझ रही है। परिवहन क्षेत्र को प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में माना जाता है। ऐसे समय में स्वच्छ ऊर्जा



आधारित सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि आर्थिक और रणनीतिक आवश्यकता भी बन चुकी है। भारत ने वर्ष 2070 तक नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में भारतीय रेल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि रेलवे अब पारंपरिक ईंधन पर निर्भरता कम करते हुए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर तेजी से बढ़ रही है। भारतीय रेल का नेटवर्क लगभग 68,500 रूट किलोमीटर में फैला हुआ है। प्रतिदिन लगभग 2.3 करोड़ यात्री तथा 30 लाख टन से अधिक माल का परिवहन इसी नेटवर्क के माध्यम से

होता है। पिछले कुछ वर्षों में रेलवे ने अपने अधिकांश ब्रॉडगेज नेटवर्क का विद्युतीकरण कर लिया है, फिर भी अनेक ऐसे रेलखंड हैं जहाँ ओवरहेड विद्युत लाइन बिछाना आर्थिक अथवा भौगोलिक दृष्टि से व्यवहारिक नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में हाइड्रोजन आधारित ट्रेनें डीजल इंजनों का स्वच्छ, टिकाऊ और प्रभावी विकल्प बन सकती हैं। हाइड्रोजन ट्रेन परियोजना के परीक्षण हरियाणा के जींद-सीनीपत रेलखंड से आरम्भ हुए थे। अब दिल्ली-जींद रेलखंड तक परीक्षण का सफल विस्तार इस तकनीक की परिपक्वता और भारतीय रेल की तैयारी का प्रमाण माना जा रहा है। परीक्षण के दौरान इमरजेंसी ब्रेकिंग डिस्टेंस, ट्रेक्शन प्रणाली, ऑसिलेशन, सुरक्षा मानकों तथा परिचालन स्थिरता की विस्तृत जांच की गई। किसी भी नई रेल तकनीक को नियमित संचालन में शामिल करने से पहले ऐसे परीक्षण अनिवार्य होते हैं ताकि यात्रियों की

सुरक्षा और परिचालन की विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके। इन परीक्षणों की सफलता भारतीय इंजीनियरों और वैज्ञानिकों की तकनीकी दक्षता का भी परिचायक है। भारत की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन का निर्माण चेन्नई स्थित इंटीग्रल कोच फैक्टरी में किया गया है, जबकि हरियाणा के जींद में हाइड्रोजन उत्पादन तथा री-फ्यूलिंग की आधारभूत संरचना विकसित की गई है।

यह उपलब्धि इस बात का प्रमाण है कि भारत अब केवल उन्नत तकनीकों का उपभोक्ता नहीं, बल्कि उनका स्वदेशी निर्माता बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा इस परियोजना में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। हाइड्रोजन ट्रेन की सबसे बड़ी विशेषता इसका पर्यावरण-अनुकूल होना है। इसमें पारंपरिक डीजल इंजन नहीं होता। फ्यूल-सेल में हाइड्रोजन

और वातावरण की ऑक्सीजन के बीच होने वाली रासायनिक अभिक्रिया से विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे ट्रेक्शन मोटर से चालित होती है। इस प्रक्रिया में कार्बन डाइऑक्साइड, धुआँ अथवा अन्य प्रदूषक गैसों का उत्सर्जन नहीं होता। उप-उत्पाद के रूप में केवल जलवाष्प निकलती है। यही कारण है कि हाइड्रोजन ट्रेन को भविष्य के सबसे स्वच्छ सार्वजनिक परिवहन साधनों में शामिल किया जा रहा है। यदि हाइड्रोजन का उत्पादन सौर, पवन अथवा अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से किया जाए तो उसे ग्रीन हाइड्रोजन कहा जाता है। भारत सरकार का राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन इसी सोच का परिणाम है। भारतीय रेल में हाइड्रोजन तकनीक का प्रयोग इस मिशन को व्यवहारिक आधार प्रदान करता है और देश को स्वच्छ ऊर्जा आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ाने का मजबूत माध्यम बन सकता है।

साँवरे! कहाँ गया

यमुना किनारे तेरा गाँव,
साँवरे! कहाँ गया?।
अरे! कहाँ गया मेरा श्याम,
साँवरे! कहाँ गया?।।
बाबा नंद खोजते फिरते,
संग मातु जशोदा।
राधा के आँसू कब सूखे,
जाय कदम्ब खोदा।
गैया बछड़े सभी पुकारे,
साँवरे! कहाँ गया?।।
आज बॉसुरी मौन पड़ी है,
मधुवन है वेहाल।
सभी गोपियाँ विरह-दग्ध? है,
राखे कौन सँभाल।
शरद-पूर्णिमा हिचकी लेती,
साँवरे! कहाँ गया?।।
आज दुखी यमुना का तट हैं,
संग है कालिंदी?।
पशु पक्षी भी व्याकुल से है,
दुखी नभ की बिंदी।
माखन की मटकी रोती है,
मन में रखे मलाल।
साँवरे! कहाँ गया?।।
माखन-चोर कहे जग सारा,
पर तू है चित-चोर।
हर लीने मनमोहन ने सब,
कोयल, मैना, मोर।
मोर मुकुट पीताम्बर धारे,
साँवरे! कहाँ गया?।।
सबके मन में बसा हुआ है,
भाव तरल हुआ है।
मन में प्रेम रूप सरसाता,
श्याम सरल हुआ है,
कान्हा है मन संग यमुना के,
कान्हा कहाँ गया?।

राज किशोर वाजपेयी 'अभय'

नदियाँ और
उनका रौद्र रूप

नदियाँ अपना रौद्र रूप धरती हैं,
तो सिर्फ घर नहीं बहते-
बह जाते हैं सपने भी,
किसी माँ की उम्मीद,
किसी पिता की प्रतीक्षा,
बच्चों की आँखों में पलता कल भी।
देखो! नेपाल की घाटियों में
आज पानी से ज्यादा
उन आँखों में नमी है,
हर आँकड़ा अपने भीतर
एक पूरा परिवार लिए खड़ा है।
कहीं कोई अपनों को खोज रहा,
कहीं कोई लौट आने की राह तक
रहा, और कहीं राहत की नाव,
यहाँ उजड़ गए हैं गाँव,
इंसानियत का हाथ बढ़ा रही है।
भले आँकड़े बढ़ते जाएँ,
इंसानियत के दर खुलते जाएँ,
पर संवेदनाएँ छोटी न हो;
लापता हर इंसान के लिए
उम्मीद की लौ बुझी न हो।
जो मिल गए, उन्हें घर मिले,
जो बिछुड़ गए, उनका पता मिले,
हर बेबस चेहरे को सहारा,
लाशों को अंतिम सम्मान मिलें,
हर घायल मन को दुआ मिले।
(संदर्भ - नेपाल हादसा - मौतों के
बढ़ते आँकड़ों के बीच)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

मन को शांत कर भीतर की शांति को महसूस करता है ध्यान

नई दिल्ली, जीएनएस।

आयुष मंत्रालय ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज पर एक पोस्ट साझा कर ध्यान यानी मेडिटेशन के महत्व और इसके लाभों के बारे में जानकारी दी है। मंत्रालय के अनुसार ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने मन को शांत कर भीतर की शांति को महसूस करता है। ध्यान करते समय पूरा फोकस केवल सांसों और आंतरिक आवाज पर रहता है, जिससे इंसान अपने मन के शोर से दूर होकर खुद से जुड़ता है। आयुष मंत्रालय का कहना है कि नियमित ध्यान करने से भय, गुस्सा, तनाव और चिंता जैसी



नकारात्मक भावनाओं से मुक्ति मिलती है। यह मन में सकारात्मक सोच विकसित करता है और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। जब व्यक्ति अपनी

भावनाओं को समझकर उन्हें नियंत्रित करना सीखता है, तो गुस्सा कम होता है और मन अधिक शांत रहता है। ध्यान एकाग्रता को भी बढ़ाने का सशक्त साधन है। आज के समय में लोग मल्टीटास्किंग के कारण अक्सर ध्यान भटका लेते हैं, लेकिन ध्यान के अभ्यास से मन स्थिर होता है और याददाश्त भी बेहतर बनती है।

यही नहीं, यह इच्छाशक्ति को मजबूत करता है, जिससे इंसान अपने लक्ष्यों की ओर अधिक समर्पण और मेहनत के साथ आगे बढ़ पाता है। ध्यान का एक और बड़ा लाभ है कि यह शरीर और मन दोनों को आराम देता है। भागदौड़

से भरे दिन के बाद ध्यान करने से शरीर की थकान दूर होती है और ऊर्जा दोबारा प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति बस आँखें बंद कर गहरी सांसें लेता है और धीरे-धीरे विचारों को शांत करता है। जैसे ही मन स्थिर होता है, भीतर सुख और संतुलन का अनुभव होता है। मंत्रालय का कहना है कि यह अभ्यास न केवल मानसिक, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है। वैज्ञानिक शोध भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि ध्यान तनाव और चिंता को कम करता है और नींद की समस्या का समाधान करता है। जिन लोगों को रात में नींद नहीं आती, उनके लिए ध्यान एक सरल

और प्रभावी उपाय हो सकता है। नियमित अभ्यास से ब्लड प्रेशर नियंत्रित होता है, रक्त संचार बेहतर होता है और दिल के कार्यों में सुधार आता है। इससे हृदय रोगों का खतरा भी कम हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि आधुनिक जीवनशैली की चुनौतियों के बीच ध्यान अपना मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए बेहद जरूरी है। बता दें कि आज की तेज-तरार जिंदगी में तनाव, चिंता और बेचैनी आम समस्या बन गई है। काम का दबाव, पढ़ाई का बोझ, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक जीवन की भागदौड़ ने लोगों के जीवन को जटिल बना दिया है।

गैस पैदा करने की प्रवृत्ति अधिक होती है बादी वाली सब्जियों में

नई दिल्ली, जीएनएस।

बादी वाली सब्जियाँ हमारे पाचन तंत्र में जाकर गैस बनाती हैं जिससे पेट में भारीपन, अफारा, गैस और दर्द जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। खासकर वे लोग जिनका पाचन कमजोर होता है, या जिन्हें अम्लीय, अतिसारी, कोलाइटिस, ग्यास्ट्रिक, पेट की जटिली जैसी समस्याएँ रहती हैं, उन्हें वादी वाली सब्जियाँ खाने से परहेज करना चाहिए।

वादी सब्जियों में मुख्य रूप से शामिल हैं- फूलगोभी, पत्ता गोभी, मूली, चना, राजमा, काबुली चना, मोठ, हरा मटर, अरबी, शलजम आदि। ये सब्जियाँ पचने में भारी होती हैं और शरीर में वायु (गैस) तत्व को बढ़ाती हैं। इसलिए जिन्हें पहले से पेट से जुड़ी ग्यास, अफारा, पेट दर्द, भीजन की शक्त शक्त कमजोरी खाने की शिकायत रहती है, उन्हें वादी सब्जियाँ कम या बिल्कुल नहीं खानी चाहिए। आयुर्वेद में भी कहा गया है कि वादी प्रकृति वाले लोग या वात दोष से पीड़ित लोग इन सब्जियों को खाने



से उनके वात दोष में वृद्धि हो सकती है, जिससे जोड़ों की दर्द, जठों में दर्द, नक्सी की दर्द, कमर दर्द, पेट दर्द आदि तकलीफें बढ़ सकती हैं। यदि आपको पाचन की समस्या रहती है तो वादी सब्जियों को खाने से पहले इन्हें अच्छे से पका लें, अदरक, हींग, अजवायन जैसी पाचक मसालों के साथ ही प्रयोग करें। इससे इनकी वादी प्रकृति कम होती है और पचने में थोड़ी मदद मिलती है। फिर भी पेट या पीड़ित लोग इन सब्जियों को खाने

कोलाइटिस, ग्यास्ट्रिक बीमारी, कीडनीज की शिकायत, काम जन्य बीमारी, कब्ज की संभव्य की दर्द होने पर डॉक्टर या आहार विशेषज्ञ की सलाह लेकर ही इन सब्जियों का सेवन करें। क्योंकि हर व्यक्ति का शरीर और पाचन तंत्र अलग होता है, इसलिए ब्लाईडली किसी सलाह का पालन करने की बजाय अपनी स्थिति को समझकर, अपने शरीर की प्रतिक्रिया देखकर ही वादी सब्जियों का सेवन करना उचित होता है।

हर काल के दौरान बदलती है शरीर की प्रकृति और पाचन शक्ति

नई दिल्ली, जीएनएस।

आयुर्वेद के अनुसार, हर काल के दौरान शरीर की प्रकृति और पाचन शक्ति बदलती है, इसलिए उसी के अनुरूप भोजन का चुनाव करना लाभकारी माना जाता है। आयुर्वेद में दिन को अलग-अलग काल में बांटकर खानपान तय करने की परंपरा है, ताकि पाचन तंत्र सक्रिय रहे और रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनी रहे। यह विभाजन तीन मुख्य दोषों कफ, पित्त और वात के आधार पर किया गया है। सही समय पर सही भोजन से ऊर्जा संतुलित रहती है, जबकि गलत समय पर अनुचित आहार लेने से पेट की समस्याएँ, थकान, आलस और वजन बढ़ने जैसी दिक्कतें हो सकती हैं। सुबह 6 से 10 बजे का समय कफ काल का होता है। सुबह का समय कफ काल कहलाता है, जब शरीर स्वभाव से भारी और ठंडा रहता है। इस समय दिन की शुरुआत गुनगुने पानी, त्रिफला जल या सादा पानी से करना चाहिए।

पपीता, सेब, अंजीर जैसे

हल्के और आसानी से पचने वाले फल ऊर्जा प्रदान करते हैं और पाचन को सक्रिय करते हैं। एक चुटकी शहद या हल्का पंचकर्म ड्रिंक भी लाभकारी है। इस समय दूध, तली-भुनी और भारी चीजों से बचना चाहिए, क्योंकि ये पाचन को सुस्त कर सकती हैं और आलस बढ़ा सकती हैं। सुबह 10 से दोपहर 2 बजे का समय पित्त काल का होता है। यह दिन का वह समय है जब पाचन अग्नि सबसे तेज होती है और शरीर पोषक तत्वों को बेहतर तरीके से अवशोषित कर सकता है। इस दौरान रोटी, दाल, मौसमी सब्जियाँ, चावल और घी वाला संतुलित भोजन सबसे उपयुक्त है। गुनगुना पानी पीना पाचन में सहायक है। दही, खट्टे फल और मीठी ड्रिंक से बचना चाहिए, खासकर गर्मियों में, ताकि पाचन में असंतुलन और पेट की तकलीफ न हो। यह दिन का मुख्य भोजन होना चाहिए, जो शाम तक ऊर्जा बनाए रखे। दोपहर 2 से शाम 5 बजे तक का समय हल्के स्नैक्स का है।

काली और सफेद मिर्च का नियमित सेवन लाभप्रद

काली और सफेद मिर्च का नियमित सेवन विभिन्न स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है। जहां काली मिर्च मसालों का प्रमुख घटक है, वहीं सफेद मिर्च हल्के और पौष्टिक व्यंजनों में अपनी जगह बनाती है।

दोनों का संतुलित उपयोग सेहत के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। भारत के केरल राज्य में काली मिर्च का लगभग 90 प्रतिशत उत्पादन होता है, जिससे यह राज्य इस मसाले का प्रमुख केंद्र है। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य भी अब इसकी खेती की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। मसालों की दुनिया में काली और सफेद मिर्च का विशेष स्थान है। जहां



काली मिर्च को मसालों का राजा कहा जाता है, वहीं सफेद मिर्च भी अपने अनोखे स्वाद और स्वास्थ्य लाभों के कारण जानी जाती है। दोनों मिर्च एक ही पौधे से आती हैं, लेकिन इनके तैयार करने के तरीके अलग-अलग

होते हैं, जिससे इनके गुणों में भी अंतर होता है।

काली मिर्च का उपयोग मुख्य रूप से मसालेदार व्यंजनों में किया जाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर की रोग

प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। यह पाचन तंत्र को मजबूत बनाती है और हृदय स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद मानी जाती है। आयुर्वेद में काली मिर्च का उपयोग सर्दी-खांसी, दांत दर्द और पाचन संबंधी

समस्याओं के इलाज में किया जाता है। इसके अलावा, यह वजन घटाने में भी मददगार है और त्वचा को स्वस्थ बनाए रखती है।

भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु के पहाड़ी क्षेत्रों में की जाती है। सफेद मिर्च का उपयोग हल्के व्यंजनों जैसे सलाद और सूप में किया जाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी, विटामिन ए और एंटीऑक्सीडेंट्स इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाते हैं। सफेद मिर्च का सेवन आँखों और मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी माना जाता है।

यह पाचन को बेहतर बनाती है और शरीर में फाइबर की पूर्ति करती है। इंडोनेशिया सफेद मिर्च का सबसे बड़ा उत्पादक है, जबकि मलेशिया और ब्राजील भी इसे काफी मात्रा में उत्पादन करते हैं।

सितंबर में किआ कारों पर बड़ी छूट, 1.20 लाख रुपए सस्ती हुई कैरेंस क्लैविस

किआ ने सितंबर 2026 में अपनी कई कारों और MPV पर आकर्षक ऑफर की घोषणा की है। कंपनी की ओर से ग्राहकों को नकद छूट, एक्सचेंज लाभ, पुरानी गाड़ी को कबाड़ में देने पर मिलने वाला लाभ, लॉयल्टी बोनस और कॉर्पोरेट छूट जैसे फायदे दिए जा रहे हैं। इस महीने सबसे ज्यादा लाभ किआ कार्निवल और किआ कैरेंस क्लैविस खरीदने वाले ग्राहकों को मिल सकता है। किआ के ये ऑफर 1 सितंबर से 30 सितंबर 2026 तक लागू हैं। हालांकि, अलग-अलग शहरों, वेरिएंट और डीलर के अनुसार छूट में अंतर हो सकता है। इसलिए वाहन खरीदने से पहले स्थानीय किआ डीलर से ऑफर और उपलब्धता की जानकारी लेना जरूरी होगा।

किआ कार्निवल पर 1.50 लाख रुपये तक का लाभ

किआ की प्रमुख स्क्वैड कार्निवल पर सितंबर में सबसे

अधिक 1.50 लाख रुपये तक के लाभ दिए जा रहे हैं। यह ऑफर केवल 2026 मॉडल वर्ष की किआ कार्निवल पर लागू है।

इसमें 1 लाख रुपये तक का एक्सचेंज लाभ और 50,000 रुपये तक की कॉर्पोरेट छूट शामिल है। भारतीय बाजार में किआ कार्निवल फिलहाल एक ही वेरिएंट में उपलब्ध है और इसकी एक्स-शोरूम कीमत 59.65 लाख रुपये है।

कैरेंस क्लैविस पर 1.20 लाख रुपये तक की छूट

सितंबर में किआ कैरेंस क्लैविस पर भी ग्राहकों के लिए बड़ी बचत का अवसर है। 2025 मॉडल वर्ष की कैरेंस क्लैविस के चुनिंदा पेट्रोल और डीजल वेरिएंट पर कुल 1.20 लाख रुपये तक का लाभ मिल सकता है।

इन वेरिएंट पर 70,000 रुपये तक की नकद छूट और 20,000 रुपये का लॉयल्टी लाभ दिया जा रहा है। इसके अलावा



ग्राहक 30,000 रुपये तक का एक्सचेंज लाभ या 20,000 रुपये तक का स्कूपेज लाभ भी ले सकते हैं। इन सभी लाभों को मिलाकर कुल फायदा 1.20 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।

वहीं 2026 मॉडल वर्ष की कैरेंस क्लैविस के चुनिंदा वेरिएंट पर 65,000 रुपये तक के लाभ उपलब्ध हैं। इसमें 10,000 रुपये की नकद छूट, 20,000 रुपये का लॉयल्टी लाभ और 30,000 रुपये तक का एक्सचेंज लाभ शामिल है। पुराने वाहन को स्कूपेज कराने पर 20,000 रुपये तक का लाभ भी मिल सकता है।

किआ कैरेंस क्लैविस की एक्स-शोरूम कीमत 11.39 लाख रुपये से शुरू होकर 20 लाख रुपये तक जाती है।

कैरेंस क्लैविस श्वडू पर 55,000 रुपये तक का फायदा

किआ कैरेंस क्लैविस श्वडू खरीदने वाले ग्राहकों के लिए भी सितंबर में कई लाभ उपलब्ध हैं। 2026 मॉडल वर्ष की इस श्वडू कार पर कुल 55,000 रुपये तक का फायदा दिया जा रहा है।

इसमें 20,000 रुपये का लॉयल्टी बोनस, 15,000 रुपये तक की कॉर्पोरेट छूट और 20,000 रुपये तक का एक्सचेंज

या स्कूपेज लाभ शामिल है। किआ कैरेंस क्लैविस श्वडू की एक्स-शोरूम कीमत 18.04 लाख रुपये से 25 लाख रुपये के बीच है।

किआ सोनेट पर 50,000 रुपये तक की बचत

किआ सोनेट के 2026 मॉडल वर्ष पर सितंबर में कुल 50,000 रुपये तक के लाभ दिए जा रहे हैं। अलग-अलग वेरिएंट के आधार पर ग्राहकों को 15,000 रुपये तक की नकद छूट और 15,000 रुपये तक की कॉर्पोरेट छूट मिल सकती है।

इसके अलावा 20,000 रुपये का एक्सचेंज लाभ या 15,000 रुपये तक का स्कूपेज लाभ भी उपलब्ध है। किआ सोनेट की एक्स-शोरूम कीमत फिलहाल 7.41 लाख रुपये से शुरू होकर 13.80 लाख रुपये तक जाती है।

किआ सिरॉस पर 35,000 रुपये तक का लाभ

किआ सिरॉस के 2026 मॉडल वर्ष के पेट्रोल और डीजल

वेरिएंट खरीदने वाले ग्राहकों को सितंबर में 35,000 रुपये तक का फायदा मिल सकता है। इसमें 15,000 रुपये तक की कॉर्पोरेट छूट शामिल है। इसके अलावा ग्राहक 20,000 रुपये तक का एक्सचेंज लाभ या स्कूपेज लाभ चुन सकते हैं। किआ सिरॉस की दृष्टि रेंज की एक्स-शोरूम कीमत 8.42 लाख रुपये से शुरू होकर 15 लाख रुपये तक जाती है।

किआ कैरेंस पर भी मिल रहा ऑफर: किआ कैरेंस के गैर-शह 2026 मॉडल वर्ष पर भी सितंबर में 35,000 रुपये तक का लाभ उपलब्ध है। इसमें 15,000 रुपये तक की कॉर्पोरेट छूट दी जा रही है। इसके साथ ग्राहकों को 20,000 रुपये तक का स्कूपेज लाभ या 10,000 रुपये का एक्सचेंज लाभ मिल सकता है। किआ कैरेंस फिलहाल एक वेरिएंट में उपलब्ध है और इसकी एक्स-शोरूम कीमत 11.12 लाख रुपये है।

नई 2026 मारुति बलेनो लॉन्च, नया इंजन और लेवल-2 ADAS सहित कई नए फीचर्स

मारुति सुजुकी ने अपनी लोकप्रिय प्रीमियम हैचबैक बलेनो के 2026 फेसलिफ्ट मॉडल को लॉन्च कर दिया है। नई मारुति बलेनो की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 6.10 लाख रुपये रखी गई है। इस अपडेट के साथ कार में डिजाइन से जुड़े कुछ बदलाव किए गए हैं, नए फीचर्स जोड़े गए हैं और सुरक्षा के स्तर को भी बेहतर बनाया गया है। सबसे बड़ा बदलाव इसके इंजन में देखने को मिलता है, क्योंकि नई बलेनो में अब नया 1.2 लीटर पेट्रोल इंजन दिया गया है। मारुति सुजुकी जल्द ही नई बलेनो के अलग-अलग वेरिएंट की कीमतों की घोषणा करेगी। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला टाटा अल्ट्रोज, हुंडई आई20 और टोयोटा ग्लैंजा जैसी प्रीमियम हैचबैक कारों से जारी रहेगा।

पुरानी बलेनो के मुकाबले नया इंजन

2026 मारुति बलेनो में



पहले मिलने वाले 1.2 लीटर, 4-सिलेंडर च12ह पेट्रोल इंजन की जगह नया 1.2 लीटर, 3-सिलेंडर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन लगाया गया है। यही इंजन मारुति स्विफ्ट और डिजायर में भी इस्तेमाल किया जाता है, हालांकि नई बलेनो के लिए इसे बेहतर शुरुआती टॉर्क देने के उद्देश्य से अलग तरीके से तैयार किया गया है। नई बलेनो का पेट्रोल इंजन 83 हॉर्सपावर की शक्ति और 112 न्यूटन मीटर का टॉर्क देता है। इसके साथ 5-स्पीड मैनुअल और 5-स्पीड स्क्वैड गियरबॉक्स के

विकल्प उपलब्ध हैं। कंपनी ने बलेनो में पहले की तरह फैक्ट्री-फिटेंट ग्रहण विकल्प भी जारी रखा है। CNG मोड में इंजन 70 हॉर्सपावर की शक्ति और 102 न्यूटन मीटर का टॉर्क देता है। ग्रहण संस्करण केवल 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ उपलब्ध है।

माइलेज के भी बेहतर आंकड़े कंपनी के अनुसार, 2026 मारुति बलेनो का मैनुअल संस्करण 23.80 किलोमीटर प्रति लीटर तक का माइलेज देने में सक्षम है। वहीं स्क्वैड संस्करण के लिए 24.77 किलोमीटर प्रति लीटर का दावा किया गया है। बलेनो ग्रहण की घोषित ईंधन दक्षता 33.61 किलोमीटर प्रति किलोग्राम है। नई बलेनो के बाहरी डिजाइन में अधिकांश बदलाव कार के अगले हिस्से में किए गए हैं। इसमें पहले की तुलना में बड़ी ग्रिल दी गई है, जिसमें अब ग्रिड सुरक्षा प्रणाली के लिए रडार मॉड्यूल लगाया गया है।

TVS, बजाज और एथर से भी तेज निकली यह छोटी कंपनी, बिक्री में 509 प्रतिशत की जबरदस्त बढ़ोतरी

भारत के इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बाजार में अगस्त 2026 के बिक्री आंकड़ों ने एक दिलचस्प तस्वीर पेश की है। कुल बिक्री के मामले में टीवीएस, बजाज, एथर और अन्य बड़े ब्रांडों का दबदबा बना रहा, लेकिन साल-दर-साल बिक्री वृद्धि के आंकड़ों में एक अपेक्षाकृत छोटी कंपनी ने सभी को पीछे छोड़ दिया। मोटोवोल्ट मोबिलिटी ने अगस्त 2026 में 509 प्रतिशत की सालाना वृद्धि दर्ज कर सबसे तेज बढ़ने वाली इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर कंपनी का स्थान हासिल किया। मोटोवोल्ट मोबिलिटी की कुल बिक्री बड़े ब्रांडों की तुलना में कम रही, लेकिन प्रतिशत के आधार पर बिक्री वृद्धि सबसे अधिक दर्ज की गई। कंपनी ने अगस्त 2026 में कुल 1,365 इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बेचे। इसके बावजूद पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 509 प्रतिशत की वृद्धि ने इसे बिक्री वृद्धि के मामले में शीर्ष पर पहुंचा दिया।



बिक्री और बिक्री वृद्धि में बड़ा अंतर

इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बाजार में किसी कंपनी की कुल बिक्री और उसकी सालाना वृद्धि को अलग-अलग नजरिए से देखा जाता है। कुल बिक्री के आधार पर टीवीएस जैसे बड़े ब्रांड आगे रहे, लेकिन पिछले वर्ष की तुलना में बिक्री कितनी तेजी से बढ़ी, इस आधार पर तस्वीर बदल गई।

अगस्त 2026 में टीवीएस ने 48,873 इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बेचे, जबकि बजाज ऑटो की

बिक्री 41,019 यूनिट रही। एथर एनर्जी ने 28,708 वाहन और हीरो विंडा ने 18,978 वाहन बेचे। हालांकि, सालाना वृद्धि के प्रतिशत के मामले में मोटोवोल्ट मोबिलिटी सबसे आगे रही।

बजाज ऑटो ने दर्ज की 235 प्रतिशत की वृद्धि

बिक्री वृद्धि के मामले में बजाज ऑटो दूसरे स्थान पर रही। कंपनी ने अगस्त 2026 में 41,019 इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बेचे और पिछले वर्ष की तुलना में 235 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की।

रॉयल एनफील्ड हिमालयन 440 लॉन्च, दमदार इंजन और 21 इंच का फ्रंट व्हील

रॉयल एनफील्ड ने अपनी नई एडवेंचर मोटरसाइकिल हिमालयन 440 को लॉन्च कर दिया है। कंपनी ने इसे लद्दाख में आयोजित हिमालयन बेसकैंप कार्यक्रम के दौरान पेश किया। नई मोटरसाइकिल की कीमत 2.29 लाख रुपये एक्स-शोरूम, चेन्नई रखी गई है। हिमालयन 440 को पुराने हिमालयन 411 के मुकाबले अधिक शक्तिशाली इंजन, नए उपकरणों और ऑफ-रोडिंग के अनुकूल बदलावों के साथ उतारा गया है। नई हिमालयन 440 में स्क्रीम 440 वाला इंजन और गियरबॉक्स इस्तेमाल किया गया है, लेकिन इसके व्हील, सस्पेंशन और रंग विकल्प इसे स्क्रीम से अलग बनाते हैं। कंपनी ने इस बाइक की बुकिंग देशभर के अपने शोरूम और आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से शुरू कर दी है।

रॉयल एनफील्ड हिमालयन 440 में स्क्रीम 440 वाला इंजन दिया गया है, जो 25.4 एचपी की पावर और 34 एनएम का टॉर्क पैदा करता है। यह हिमालयन 411 के मुकाबले 1.4 एचपी अधिक पावर और 2 एनएम ज्यादा टॉर्क देता है।

कंपनी के अनुसार, इंजन की ताकत को बेहतर बनाने के लिए बोर में 3 मिमी की बढ़ोतरी की गई है। नया इंजन कम आरपीएम पर भी बेहतर टॉर्क उपलब्ध कराने के लिए तैयार किया गया है। इंजन का लगभग 90 प्रतिशत टॉर्क 2,800 आरपीएम से मिलना शुरू हो जाता है, जिससे कम और मध्यम गति पर बाइक चलाना आसान हो सकता है।

6-स्पीड गियरबॉक्स और 15 लीटर का फ्यूल टैंक

नई हिमालयन 440 में 6-



स्पीड गियरबॉक्स दिया गया है। इसके साथ 15 लीटर की क्षमता वाला फ्यूल टैंक मिलता है। लंबी दूरी की यात्रा और हाईवे राइडिंग को ध्यान में रखते हुए यह संयोजन उपयोगी साबित हो सकता है।

हालांकि, बाइक में स्लिपर क्लच नहीं दिया गया है। ब्रेकिंग सिस्टम में आगे 300 मिमी डिस्क और पीछे 240 मिमी डिस्क ब्रेक दिया गया है। मोटरसाइकिल में डुअल-चैनल एबीएस स्टैंडर्ड तौर

पर मिलता है और जरूरत पड़ने पर रियर एबीएस को बंद भी किया जा सकता है, जिससे ऑफ-रोड परिस्थितियों में बेहतर नियंत्रण मिल सकता है।

नया इंस्ट्रुमेंट क्लस्टर और नेविगेशन

हिमालयन 440 में नया इंस्ट्रुमेंट क्लस्टर दिया गया है, जो पुराने हिमालयन 411 के मुकाबले अलग डिजाइन में आता है। इसमें ट्विन-पॉइंट लेआउट

मिलता है। बाईं ओर स्पीडोमीटर दिया गया है, जबकि दूसरी तरफ ट्रिपर नेविगेशन पॉइंट मौजूद है, जिसमें गूगल मैप्स आधारित नेविगेशन की सुविधा मिलती है। मोटरसाइकिल में एलईडी हेडलाइट और अन्य नियंत्रण स्विच स्क्रीम 440 जैसे ही हैं। हालांकि, हिमालयन 440 में यूएसबी टाइप-सी चार्जिंग पोर्ट दिया गया है, जो स्क्रीम 440 में मिलने वाले यूएसबी टाइप-ए पोर्ट की तुलना में नया है।

21 इंच का फ्रंट व्हील, ऑफ-रोडिंग पर खास फोकस

नई हिमालयन 440 और स्क्रीम 440 के बीच सबसे बड़ा अंतर इसके व्हील और सस्पेंशन सेटअप में देखने को मिलता है। हिमालयन 440 में 21 इंच का फ्रंट व्हील दिया गया है, जबकि स्क्रीम 440 में 19 इंच का अगला पहिया

मिलता है। पीछे की तरफ 17 इंच का व्हील दिया गया है। रॉयल एनफील्ड ने हिमालयन 440 में अलॉय व्हील का विकल्प नहीं दिया है। इसे ऑफ-रोडिंग को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। फिलहाल इस बाइक में टयूबलेस टायर भी नहीं दिए गए हैं।

हिमालयन 440 के फ्रंट सस्पेंशन में 200 मिमी का ट्रैवल मिलता है, जो स्क्रीम 440 के 190 मिमी से 10 मिमी ज्यादा है। यह पुराने हिमालयन 411 के बराबर है। पीछे की तरफ 180 मिमी सस्पेंशन ट्रैवल दिया गया है और इसमें लिंकड मोनोशॉक सेटअप मिलता है। स्क्रीम 440 की तुलना में हिमालयन 440 की सीट की ऊंचाई केवल 5 मिमी बढ़ी है। हालांकि, इसका वजन बढ़कर 199 किलोग्राम हो गया है, जो स्क्रीम 440 से 12 किलोग्राम अधिक है।

हनुमान अंश : हिंदुस्तान की जड़ों से संवाद करता सिनेमा



भारत को समझने के लिए केवल उसके शहरों, बाजारों और आधुनिकता को देखना पर्याप्त नहीं है। भारत को समझना हो तो उसकी जड़ों तक पहुँचना होगा- उसकी आस्था, लोक-स्मृति, संस्कृति और उन कथाओं तक, जिन्होंने सदियों से उसके सामूहिक मन को आकार दिया है। इसी संदर्भ में 'हनुमान अंश' जैसी फिल्म का महत्व केवल उसके बॉक्स ऑफिस प्रदर्शन तक सीमित नहीं रह जाता।

यह फिल्म इसलिए भी उल्लेखनीय है कि उसने दर्शकों को केवल मनोरंजन नहीं दिया, बल्कि उन्हें उनकी अपनी सांस्कृतिक स्मृति से जोड़ने का भरसक प्रयास किया है। हनुमान भारतीय मानस में केवल एक धार्मिक पात्र नहीं हैं; वे शक्ति, समर्पण, साहस, सेवा, निष्ठा और आत्मविश्वास के प्रतीक हैं। इसलिए जब उनकी कथा आधुनिक माध्यम -सिनेमा के रुपहले पर्दे- के जरिए सामने आती है, तो वह नई पीढ़ी और पुरानी सांस्कृतिक चेतना के बीच एक सेतु का काम करती है।

फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि शायद यही है कि उसका प्रचार केवल पोस्टर, विज्ञापन या बड़े प्रचार-अभियानों से नहीं हुआ। दर्शकों ने स्वयं उसके प्रचार का माध्यम बनना शुरू कर दिया। जिसने भी यह फिल्म देखी, उसने उसके बारे में परिवार, मित्रों और परिचितों से बात की। यही मौखिक प्रचार धीरे-धीरे व्यापक जनरुचि में बदलता गया। यह घटना बताती है कि जब कोई रचना समाज के भावनात्मक संसार को छू लेती है, तो उसके लिए प्रचार का सबसे प्रभावशाली माध्यम स्वयं दर्शक बन जाते हैं।

फिल्म की बढ़ती कमाई के आँकड़े निश्चित रूप से आकर्षित करते हैं। साथी नई निर्माता निर्देशकों को इस तरह से जमीन से जुड़ी फिल्मों के लिए परेड भी करने का काम करते हैं। बड़े बजट की फिल्मों के सामने टिक पाना भी अपने आप में एक चमत्कार ही है। सोचिए जिस फिल्म को स्क्रीन मिलना दुभर हो रहा था उसे फिल्म की माऊथ पब्लिसिटी ने इसे आज कहाँ से कहाँ तक पहुँचा दिया है।

शुरुआती सीमित प्रदर्शन और सामान्य गति से आगे बढ़कर उसका व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचना इस बात का संकेत है कि भारतीय दर्शक केवल बड़े बजट, बड़े सितारों और आक्रामक प्रचार से प्रभावित नहीं होता। कहानी में आत्मीयता हो, विषय में भारतीयता हो और प्रस्तुति मन को छूने वाली हो, तो दर्शक उसे स्वयं स्वीकार करने को तैयार बैठ जाते हैं। यहाँ 'हनुमान अंश' एक फिल्म से आगे बढ़कर एक सांस्कृतिक संकेत बन जाती है। आज के दौर में सिनेमा मनोरंजन के साथ-साथ समाज की स्मृतियों को सुरक्षित रखने का भी एक प्रभावी माध्यम है। हमारी लोककथाएँ, पौराणिक प्रसंग और सांस्कृतिक प्रतीक यदि आधुनिक भाषा और तकनीक में नई पीढ़ी के सामने आएँ, तो वे केवल

अतीत की वस्तु नहीं रहेंगे, बल्कि वर्तमान के अनुभव का हिस्सा बन सकते हैं। इस दृष्टि से धार्मिक या सांस्कृतिक विषयों पर बनने वाला सिनेमा तभी सार्थक है, जब वह आस्था को केवल बाजार न बनाए, बल्कि उसके भीतर छिपे मानवीय मूल्यों को भी सामने लाए।

'हनुमान अंश' की चर्चा इसी कारण महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से एक बड़ा प्रश्न भी सामने आता है-दर्शक किसी फिल्म से वास्तव में क्या चाहता है? क्या केवल मनोरंजन? क्या केवल भव्य दृश्य? क्या केवल कमाई के रिकॉर्ड? शायद नहीं। वर्तमान में दर्शक ऐसी कहानी भी चाहता है जिसमें उसे अपना अतीत दिखाई दे, अपनी संवेदना सुनाई दे और अपनी पहचान का कोई अंश हृदय तक महसूस हो। जब सिनेमा यह अनुभव पैदा करता है, तब पर्दे और दर्शक के बीच की दूरी समाप्त होने लगती है।

आज जब भारतीय सिनेमा वैश्विक मंच पर अपनी पहचान मजबूत कर रहा है, तब यह आवश्यक है कि वह अपनी जड़ों से भी उतना ही संवाद करें। आधुनिक तकनीक और भारतीय संस्कृति का मेल एक ऐसी सिनेमाई भाषा तैयार कर सकता है, जो मनोरंजन के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक चेतना को भी समृद्ध करें।

अंततः 'हनुमान अंश' की सफलता का मूल्यांकन केवल करोड़ों की कमाई से करना उसके प्रभाव को छोटा कर देना होगा। लेकिन इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि दो करोड़ रुपए में बनी फिल्म 100 करोड़ के आसपास दस्तक दे रही है तो बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री के लिए चमत्कार ही है। (याद रहें कि इससे पहले सत्तर के दशक में -जय संतोषी माँ- फिल्म का उदाहरण भी हमारे सामने है जो पाँच लाख में बनी थी और उसने पचास लाख का कारोबार किया था।

इस फिल्म ने भी जनमानस के दिलों पर अमिट छाप छोड़ी थी।) उसकी असली सफलता इस बात में है कि उसने दर्शक को कहानी देखने के बाद अपनी जड़ों की ओर देखने के लिए प्रेरित किया। क्योंकि जिस सिनेमा को देखने के बाद दर्शक केवल टिकट की कीमत नहीं, अपनी संस्कृति का मूल्य समझने लगे, वहीं सिनेमा वास्तव में समाज से संवाद करता है।

**संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)**

आरोपी मुकेश मौर्य की सदस्यता समाप्त होने के बाद कथित कूटरचित दस्तावेजों का मामला सदस्यता एवं वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े गंभीर आरोप

भोपाल, जीएनएस।

मध्यप्रदेश अनुसूचित जाति जनजाति अधिकारी कर्मचारी संघ (अजाक्स) प्रांताध्यक्ष आईएस संतोष वर्मा के नेतृत्व में पुलिस महानिदेशक भोपाल को ज्ञापन सौंपते हुए कहा माननीय न्यायालय के आदेश का अतिशीघ्र परिपालन हो ज्ञापन में बताया कि माननीय न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी, भोपाल के समक्ष प्रस्तुत परिवाद प्रकरण क्रमांक हृष्टक 10566/2025 में पारित आदेश दिनांक 01.09.2026 के पालन में संबंधित आरोपित व्यक्तियों के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज किए जाने की मांग की गई है।

माननीय न्यायालय द्वारा परिवाद में वर्णित तथ्यों के आधार पर थाना प्रभारी, टी.टी. नगर, भोपाल को प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर न्यायालय को सूचित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसी आदेश के अनुपालन में अजाक्स संघ द्वारा पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय, जहांगीराबाद, भोपाल को आवेदन प्रस्तुत कर आवश्यक कार्रवाई की मांग की गई है।

1. सदस्यता एवं वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े गंभीर आरोप

परिवाद में आरोप लगाया गया है कि आरोपी मुकेश मौर्य द्वारा स्वयं को शासकीय कर्मचारी बताकर अजाक्स संघ की सदस्यता प्राप्त की गई, जबकि संघ के संविधान के अनुच्छेद 4(2) के अनुसार सदस्यता के लिए निर्धारित पात्रता आवश्यक है।

परिवाद के अनुसार मुकेश मौर्य माधव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (स्कूड्स), गोला का मंदिर, ग्वालियर में मशीन अटेंडेंट के पद पर कार्यरत रहे हैं। इसी आधार पर उनकी सदस्यता की पात्रता पर गंभीर प्रश्न उठाए गए हैं।

इसके अतिरिक्त परिवाद में यह भी आरोप है कि विभिन्न तिथियों पर

प्रांतीय कार्यालय से प्राप्त रसीद कट्टों के माध्यम से लगभग ₹17.95 लाख की राशि संघ के नाम पर सदस्यों से प्राप्त की गई, जिसे संघ के खाते में जमा नहीं किया गया। साथ ही, स्थानीय स्तर पर कथित रूप से अनधिकृत रसीद बुक छपवाकर लगभग ₹12,94,290/- की राशि प्राप्त करने तथा उसका लेखा-जोखा प्रांतीय कार्यालय को प्रस्तुत नहीं करने के आरोप भी लगाए गए हैं।

संघ का कहना है कि जीवन सदस्यता सहित अन्य मदों में सदस्यों से प्राप्त राशि का भी अपेक्षित लेखा-जोखा प्रस्तुत नहीं किया गया।

2. सदस्यता समाप्त होने के बाद कथित कूटरचित दस्तावेजों का मामला

अजाक्स संघ के अनुसार, बार-बार जवाब देने एवं राशि का हिसाब प्रस्तुत करने के अवसर दिए जाने के बावजूद अपेक्षित स्पष्टीकरण एवं राशि जमा नहीं की गई। इसके पश्चात 30.07.2023 को राज्य कार्यकारिणी की बैठक में आरोपी मुकेश मौर्य की प्राथमिक सदस्यता समाप्त करने का निर्णय लिया गया।

परिवाद में आरोप है कि सदस्यता समाप्त होने के बाद मुकेश मौर्य द्वारा संघ के लेटरहेड एवं अन्य दस्तावेजों का कथित रूप से कूटरचित उपयोग करते हुए रजिस्ट्रार, फर्मस एवं सोसाइटीज के समक्ष स्वयं को अजाक्स संघ का अध्यक्ष निर्वाचित किए जाने का दावा प्रस्तुत किया गया।

विशेष रूप से, परिवाद में यह तथ्य सामने रखा गया है कि एक दस्तावेज में 30.07.2023 को जनरल मीटिंग में अध्यक्ष चुने जाने का दावा किया गया, जबकि बाद में 17.08.2023 को प्रस्तुत दस्तावेज में जनरल मीटिंग की तारीख 29.07.2023 बताई गई।

संघ का कहना है कि स्वयं को अध्यक्ष चुने जाने के संबंध में दो

अलग-अलग तिथियों का उल्लेख कथित दस्तावेजों की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्न खड़ा करता है।

3. रजिस्ट्रार एवं असिस्टेंट रजिस्ट्रार की भूमिका पर भी उठे गंभीर सवाल

परिवाद में रजिस्ट्रार, फर्मस एवं सोसाइटीज तथा असिस्टेंट रजिस्ट्रार की भूमिका के संबंध में भी गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

अजाक्स संघ का कहना है कि संबंधित अधिकारियों को संघ की वास्तविक कार्यकारिणी, वर्ष 2023-26 के निर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष श्री जे. एन. कंसोटिया तथा मुकेश मौर्य की सदस्यता समाप्त किए जाने की जानकारी पूर्व से दी गई थी। इसके बावजूद, परिवाद के अनुसार, आरोपी मुकेश मौर्य द्वारा प्रस्तुत कथित दस्तावेजों एवं अध्यक्ष पद के दावे के संबंध में अपेक्षित वैधानिक परीक्षण नहीं किया गया।

संघ के अनुसार, सामान्य सभा/जनरल मीटिंग के आयोजन के लिए संघ के उपनियमों में निर्धारित प्रक्रिया, जिसमें सदस्यों को निर्धारित अवधि पूर्व सूचना देना, बैठक का विधिवत आयोजन तथा अधिकृत पदाधिकारियों की भूमिका शामिल है, का पालन किया जाना आवश्यक था।

परिवाद में यह आरोप लगाया गया है कि इन परिस्थितियों की जानकारी होने के बावजूद संबंधित अधिकारियों द्वारा की गई कार्यवाही से मुकेश मौर्य को अनुचित लाभ पहुंचाने की आशंका एवं मिलीभगत की भूमिका की जांच की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

4. न्यायालय के आदेश के बाद अब निष्पक्ष स्रद्धा एवं विवेचना की मांग

अजाक्स संघ ने स्पष्ट किया है कि मामला अब केवल संगठनात्मक विवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कथित धोखाधड़ी, कूटरचित दस्तावेजों के उपयोग, वित्तीय अनियमितताओं तथा आपराधिक षड्यंत्र जैसे गंभीर आरोप न्यायालय

के समक्ष रखे गए हैं।

माननीय न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी, भोपाल द्वारा दिनांक 01.09.2026 को पारित आदेश के बाद अजाक्स संघ ने पुलिस महानिदेशक, मध्यप्रदेश से मांग की है कि न्यायालय के आदेश का अक्षरशः पालन करते हुए संबंधित आरोपित व्यक्तियों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 318(4), 338, 336(3), 340(2), 61(2) एवं 3(5) के अंतर्गत विधि अनुसार प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की जाए तथा मामले की निष्पक्ष, स्वतंत्र एवं प्रभावी विवेचना सुनिश्चित की जाए।

संघ ने यह भी मांग की है कि कथित कूटरचित दस्तावेजों, रसीद पुस्तिकाओं, बैंक खातों, सदस्यता अभिलेखों, रजिस्ट्रार कार्यालय में प्रस्तुत दस्तावेजों तथा संबंधित शासकीय रिकॉर्ड की विधिवत जांच कर वास्तविक तथ्यों को अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर सामने लाया जाए। अजाक्स संघ का कहना है कि माननीय न्यायालय के आदेश का पालन कानून के शासन और न्यायिक प्रक्रिया की गरिमा से जुड़ा विषय है। अतः पुलिस प्रशासन से अपेक्षा है कि मामले में किसी भी प्रकार के प्रभाव अथवा दबाव से मुक्त होकर विधि के अनुरूप आरोपियों के विरुद्ध माननीय न्यायालय के आदेश अनुसार संज्ञेय धाराओं प्राथमिकी दर्ज कर गिरफ्तार करते हुए जेल भेजने की कार्यवाही हो जिससे आरोपियों के हौसले पस्त हों कानून के प्रति जनमानस का विश्वास में बढ़ोतरी हो पुलिस महानिदेशक भोपाल को ज्ञापन सौंपने वालों में आजक्स प्रतिनिधि मंडल जिसमें अजाक्स प्रांताध्यक्ष आईएस संतोष वर्मा, कार्यवाहक प्रांताध्यक्ष इंजी एस एल सूर्यवंशी, प्रांतीय महासचिव गौतम पाटिल, प्रांतीय महासचिव राजवीर अग्निहोत्री, प्रांतीय संयुक्त सचिव अशोक वेन, जिलाध्यक्ष विनोद बट्टी, आदि उपस्थिति थे।

नई दिल्ली: 5G के बाद 6G की तैयारी, भारत ने अमेरिका समेत 24 देशों से मिलाया हाथ

नई दिल्ली- 5G की सफलता के बाद अब भारत ने 6G की ओर एक बेहद मजबूत कदम बढ़ा दिया है। दुनिया भर में अभी 5G सेवाओं का विस्तार हो ही रहा है, लेकिन भारत सरकार ने अपनी दूरदर्शी सोच का परिचय देते हुए अभी से 6G की नींव रख दी है। डिजिटल दुनिया में अपनी धाक जमाने के लिए देश ने अमेरिका के नेतृत्व वाले एक बड़े ग्लोबल एलायंस में शामिल होने का फैसला किया है। ये एक ऐसा कदम है जो आने वाले कुछ सालों में देश के टेक्नोलॉजी सेक्टर की पूरी तस्वीर बदल कर रख देगा। 6G नेटवर्क केवल इंटरनेट की स्पीड नहीं बढ़ाएगा, बल्कि ये एआई से लेकर रोबोटिक्स तक हर सेक्टर में नई जान फूंक देगा।

6G नेटवर्क पर बढ़ा ग्लोबल गठबंधन-

भविष्य की संचार क्रांति को दिशा देने के लिए अमेरिका ने एक



वैश्विक पहल शुरू की है। अमेरिकी वाणिज्य विभाग के मुताबिक, भारत अब 6G तकनीक को विकसित करने वाले 24 अन्य देशों के मजबूत समूह का हिस्सा बन गया है। ये अहम समझौता हाल ही में अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना स्थित चैपल हिल में आयोजित त20 इनोवेशन मंत्री स्तरीय बैठक के दौरान हुआ। इस खास बैठक में भारत की तरफ से केंद्रीय वाणिज्य राज्य मंत्री जितिन प्रसाद तथा अमेरिकी वाणिज्य सचिव हावर्ड लटनिक के बीच लंबी द्विपक्षीय बातचीत हुई। इसी बातचीत के बाद भारत के इस गठबंधन में आधिकारिक रूप से शामिल होने पर अंतिम मुहर लगी।

इनोवेशन बैठक में भारत की मजबूत उपस्थिति

त20 इनोवेशन बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने किया। उनके साथ इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्रालय (MeitY), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) के अधिकारी मौजूद थे। अमेरिकी वाणिज्य विभाग ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी दी कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य साझा सुरक्षा हितों को सुनिश्चित करना है। इसके साथ ही ये समूह 6G के क्षेत्र में इनोवेशन को बढ़ावा देने का काम करेगा। सम्मेलन के अंत में सभी देशों के मंत्रियों ने एक साझा बयान भी जारी किया। इसमें साफ कहा गया कि उभरती हुई नई तकनीक दुनिया भर के लोगों के लिए तरक्की के नए दरवाजे खोल सकती है। वाणिज्य राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने अमेरिकी सचिव

हावर्ड लटनिक के साथ सिर्फ 6G पर ही बात नहीं की, बल्कि कई अन्य अहम मुद्दों पर भी गहन चर्चा की। दोनों नेताओं के बीच सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़े डेटा सेंटर्स पर भी अहम विचारों का आदान-प्रदान हुआ। बैठक के दौरान राज्य मंत्री ने अमेरिका से इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (ISM 2.0) में अधिक निवेश करने की संभावनाओं पर जोर दिया।

इसके अलावा एआई तकनीक साझेदारी को मजबूत करने पर भी विस्तार से बात हुई। जितिन प्रसाद ने एक्स पर पोस्ट करते हुए बताया कि ये सभी सेक्टर उभरती हुई डिजिटल अर्थव्यवस्था के बुनियादी आधार हैं। उन्होंने अपनी पोस्ट में अमेरिकी त20 अध्यक्षता को उनकी तमोजोशी भरी मेहमानवाजी के लिए विशेष धन्यवाद भी दिया। अमेरिका दौरे पर हुई।

ग्लोइंग स्किन की चाहत हो सकती है पूरी

बस चेहरे पर लगाएं केले से बने ये फेस पैक

केले को सुपरफूड के रूप में जाना जाता है। इसे खाने से सेहत को कई फायदे होते हैं। पाचन को स्वस्थ रखने के लिए नियमित रूप से पके केले खाने की सलाह दी जाती है। पोषक तत्वों से भरपूर केला शरीर को कई रोगों से बचाने में मदद करता है, लेकिन क्या आप जानते हैं, यह स्किन के लिए भी काफी लाभदायक है। आप इससे कई तरह के फेस पैक बना सकते हैं, जिन्हें चेहरे पर अप्लाई कर ग्लोइंग स्किन पा सकते हैं। आइए जानते हैं केले का फेस पैक कैसे बनाएं।



केला और दही का फेस पैक

अगर आप झुर्रियों से छुटकारा पाना चाहती हैं, तो यह फेस मास्क आपके लिए बेहतर साबित हो सकता है। इस फेस पैक को बनाने के लिए एक पके केले को मैश कर लें, इसमें एक-दो चम्मच दही मिलाएं। अब इस पैक को फेस पर अप्लाई करें। सूखने के बाद पानी से धो लें।

केला और बेसन का पैक

यह फेस पैक चेहरे के दाग-धब्बों को कम करने में मदद करता है। एक बाउल में केले का पेस्ट लें, इसमें नींबू का रस और एक चम्मच बेसन मिलाएं। अब आप इस पैक को चेहरे पर लगाएं, सूखने के बाद इसे पानी से धो लें।

केला, नारियल तेल और शहद का पैक

जिन लोगों को ड्राई स्किन की समस्या है, उनके लिए यह फेस काफी अच्छा साबित हो सकता है। इसके लिए केले को मैश कर लें, इसमें नारियल तेल और शहद मिलाएं। इस पैक को चेहरे पर लगाएं, कुछ देर बाद पानी से धो लें।

केला और पपीते का फेस मास्क

अगर आपकी स्किन आयली है, तो यह फेस मास्क जरूर ट्राई करें। इसे बनाने के लिए एक बाउल में केले का पेस्ट तैयार कर लें, इसमें पपीते भी मैश कर मिलाएं। अब इस मिश्रण को चेहरे और गर्दन पर लगाएं, लगभग 15 मिनट बाद पानी से चेहरा धो लें।



वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को TET से मिले छूट: मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ (पोरसा) ने प्रधानमंत्री के नाम सौंपा जापन

मुरैना/पोरसा जीएनएस। अखिल भारतीय राज्य कर्मचारी महासंघ एवं मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के आह्वान पर मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ (तहसील/विकासखण्ड पोरसा, जिला-मुरैना) द्वारा तहसील अध्यक्ष श्री रविंद्र सिंह तोमर ने 2010 से पूर्व नियुक्त अध्यापकों पर ज्ञान संशोधन एवं नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों के पूर्णतः विरुद्ध है। संशोधित परिपत्र जारी करने की मांग: देश एवं प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2010 के उपरांत ही ज्ञान संशोधन से नई नियुक्तियां दी गई हैं। अतः केंद्र सरकार नियमों में आवश्यक संशोधन कर वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त समस्त शासकीय

न्यायोचित मांगों का त्वरित समाधान कराना है।

1. मुख्य मुद्दा- वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को ज्ञान संशोधन से छूट (कानूनी आधार व मांगें) ज्ञान संशोधन में संघ प्रतिनिधियों एवं तहसील अध्यक्ष श्री रविंद्र सिंह तोमर ने 2010 से पूर्व नियुक्त अध्यापकों पर ज्ञान संशोधन का कड़ा विरोध व्यक्त करते हुए निम्नलिखित तथ्य व बिंदु सामने रखे-

NCTE विनियम 2001 एवं 2010 का संदर्भ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) विनियम 2001 में अध्यापकों की नियुक्ति हेतु कक्षा. व ग्रे. को अनिवार्य अर्हता माना गया था। तत्पश्चात 23 अगस्त 2010 की अधिसूचना की कड़िका 4 में स्पष्ट उल्लेख था कि 23 अगस्त 2010 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को ज्ञान संशोधन अर्हता हासिल करने की आवश्यकता नहीं है, उन्हें केवल 6 माह का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा। अनुभव की अनदेखी का



विरोध- वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त अध्यापक/शिक्षक पिछले 10 से 15 वर्षों से भी अधिक समय से निरंतर निष्ठापूर्वक शासकीय स्कूलों में अध्यापन करा रहे हैं। ऐसे अनुभवी शिक्षकों को ज्ञान संशोधन न होने के आधार पर अनिवार्य सेवानिवृत्ति या सेवामुक्ति का भय दिखाना उनके वर्षों के अनुभव, विभागीय प्रशिक्षण एवं नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों के पूर्णतः विरुद्ध है।

संशोधित परिपत्र जारी करने की मांग: देश एवं प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2010 के उपरांत ही ज्ञान संशोधन से नई नियुक्तियां दी गई हैं। अतः केंद्र सरकार नियमों में आवश्यक संशोधन कर वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त समस्त शासकीय

अध्यापकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (ज्ञान संशोधन) से छूट प्रदान करने हेतु अविलंब स्पष्ट परिपत्र जारी करें।

पदोन्नति नियम- योग्य प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों को बिना ज्ञान संशोधन की बाध्यता के पदोन्नति दी जाए तथा ग्रे. श्र. / कक्षा. की अनिवार्यता पदोन्नति उपरांत लागू की जाए।

पुरानी पेंशन (हक्क) एवं कर्मचारी कल्याण की मांगें-

पुरानी पेंशन योजना (हक्क)- प्रदेश में पुरानी पेंशन योजना को वरिष्ठता के साथ पुनः लागू किया जाए एवं ग्रे. श्र. की अधिकतम सीमा केंद्र के समान बढ़ाकर 225 लाख की जाए।

महंगाई भत्ता (ह) व एरियर- प्रदेश के कर्मचारियों व

पेंशनरों को केंद्र के समान महंगाई भत्ता (ह) तथा लंबित एरियर का भुगतान किया जाए।

* स्वास्थ्य बीमा व नियम निरस्तीकरण- कर्मचारियों व पेंशनरों हेतु कैशलेस स्वास्थ्य बीमा योजना लागू हो तथा दो संतान की बाध्यता संबंधी नियम को निरस्त किया जाए।

लिपिक संवर्ग हेतु वेतनमान- लिपिक संवर्ग को मंत्रालय के समान समयमान वेतनमान का लाभ दिया जाए।

संविदा, आउटसोर्स एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी-

नियमितीकरण- दैनिक वेतनभोगी, संविदा कर्मचारी, स्थायी कर्मी एवं आउटसोर्स कर्मचारियों का रिक्त पदों के विरुद्ध नियमितीकरण किया जाए।

स्टायपेंड व्यवस्था समाप्त हो- नवीन नियुक्तियों में 3 वर्ष की स्टायपेंड व्यवस्था समाप्त कर पूर्ववत् 2 वर्ष की परिवीक्षा अवधि लागू की जाए।

स्थानीय एवं जिला (मुरैना) स्तरीय लंबित समस्याएं-

समयमान वेतनमान व क्रमोन्नति- जिला स्तर पर 10 वर्ष पूर्ण कर चुके उच्च माध्यमिक शिक्षकों के समयमान वेतनमान एवं प्राथमिक शिक्षकों की 12, 24 व 36 वर्ष की क्रमोन्नति फाइलों का अविलंब निराकरण हो।

* कोषालय अधिकारी की कार्यप्रणाली पर रोक- जिला कोषालय अधिकारी (Murena Treasury) द्वारा बेवजह आपत्ति लगाकर फाइलें वापस लौटाने की प्रवृत्ति पर सख्त रोक लगाई जाए।

* विभागीय वेतन विसंगतियां- स्वास्थ्य विभाग, महिला एवं बाल विकास, आयुष तथा कृषि विभाग के कर्मचारियों की लंबित वेतन विसंगतियों का त्वरित निराकरण किया जाए। तहसील अध्यक्ष श्री रविंद्र सिंह तोमर ने कहा कि 2010 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों के भविष्य और उनकी सेवाओं की सुरक्षा हेतु सरकार को तुरंत नियम संशोधन का परिपत्र जारी करना चाहिए, अन्यथा संघ चरणबद्ध आंदोलन हेतु बाध्य होगा।



आत्मविश्वास का साथ आत्मनिर्भरता की राह



अब तक
लाइली बहनों को
₹65,300 करोड़+
की सहायता का अंतरण



सीधा प्रसारण

Webcast: gov.in/mp/cmevents



@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh



@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP



jansamparkMP

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

1.25 करोड़+ लाइली ₹1835 करोड़+ बहनों को का अंतरण

मुख्यमंत्री

डॉ. मोहन यादव द्वारा

विकास कार्यों का
भूमिपूजन एवं लोकार्पण

13 सितम्बर, 2026 | आगर मालवा, मध्यप्रदेश

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2026 D-11111/26